कहानियों का ख़ज़ाना

हिन्दी (कक्षा 3–5)

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली–110024

सत्यमेव जयते

उप मुख्यमंत्री

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

यह एक कड़वी सच्चाई है कि दिल्ली नगरपालिका के प्राथमिक विद्यालयों व दिल्ली सरकार के माध्यमिक विद्यालयों में पढ़ने वाले बहुत से बच्चे अपनी कक्षा-स्तरीय पाठ्यपुस्तकों को पढ़ने में भी सक्षम नहीं हैं।

पिछले तीन वर्षों में, दिल्ली सरकार ने ऐसे कई तरह के कदम उठाए, जिनसे कक्षा 6-8 के बच्चों की शिक्षा के स्तर में सुधार आया। इस पहल से हमें कई अच्छे परिणाम भी मिले, परन्तु हमने यह भी जाना कि हम सभी बच्चों को उनके शिक्षा स्तर तक लाने में पूरी तरह सफल तभी हो सकते हैं जब हम प्राथमिक कक्षाओं से ही बच्चों की शिक्षा पर ध्यान दें।

सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हर बच्चे को सफल होने का हर प्रकार से मौका मिलना चाहिए। 'कोई भी बच्चा पीछे न छूटे', यह सुनिश्चित करना 'मिशन बुनियाद' का प्रयास है। बच्चों में पढ़ने की क्षमता व मूलभूत (बेसिक) गणित की समस्याओं को हल करने की क्षमता अति महत्वपूर्ण है। इन्ही क्षमताओं के आधार पर आगे की कक्षाओं में शिक्षक अन्य सभी विषयों को सिखा सकते हैं।

सभी अभिभावकों के पूर्ण सहयोग द्वारा ही मिशन बुनियाद को सफल बनाया जा सकता है। ज़रूरी है कि हमें अपने सभी बच्चों को प्रतिदिन स्कूल आने के लिए प्रेरित करें, ताकि वे आवश्यक विषयों एवं पाठ का भली-भांति ज्ञान प्राप्त कर सकें। इस प्रकार के छोटे छोटे कदम हमारे बच्चों की सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि शिक्षक व अभिभावक साथ मिलकर सभी बच्चों के लिए एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करेंगे।

शिक्षित राष्ट्र समर्थ राष्ट्र

शुभकामनाओं सहित,

मनीष सिसोदिया

छुक-छुक-छुक

रीना ने स्लेट और चॉक उठाई। वह रेलगाड़ी बनाने लगी। मगर अब डिब्बे कहाँ बने? बैठे-बैठे रीना ने फ़र्श पर एक डिब्बा बनाया। डिब्बे के साथ एक और डिब्बा, फिर

एक डिब्बा, रीना बनाती चली गई। फिर उसकी चॉक ख़त्म हो गई। उसने उठकर देखा। वाह! पूरे बरामदे में लम्बी रेलगाड़ी बन चुकी थी। रीना की रेल चली छुक-छुक-छुक, इधर से उधर। बहुत दूर तक।

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री

लेखनः विनिता कृष्णा

मुर्ग़ा मामू

अपने मुर्गा मामू का आज पारा चढ़ा हुआ था। उसने सोचा कल वह बाँग नहीं देगा, तब कैसे होगा सवेरा। सारी रात वह सोया रहा। किसी के जगाने पर भी वह नहीं जागा। सूरज सिर चढ़ आया। यह देखकर मुर्ग़ा मामू

ख़ूब झल्लाए। काम नहीं रुकता किसी के बिना, चाहे कोई कितना भी इतराए। यह बात मुर्गा मामू को समझ में आ गई।

लेखनः प्रथम

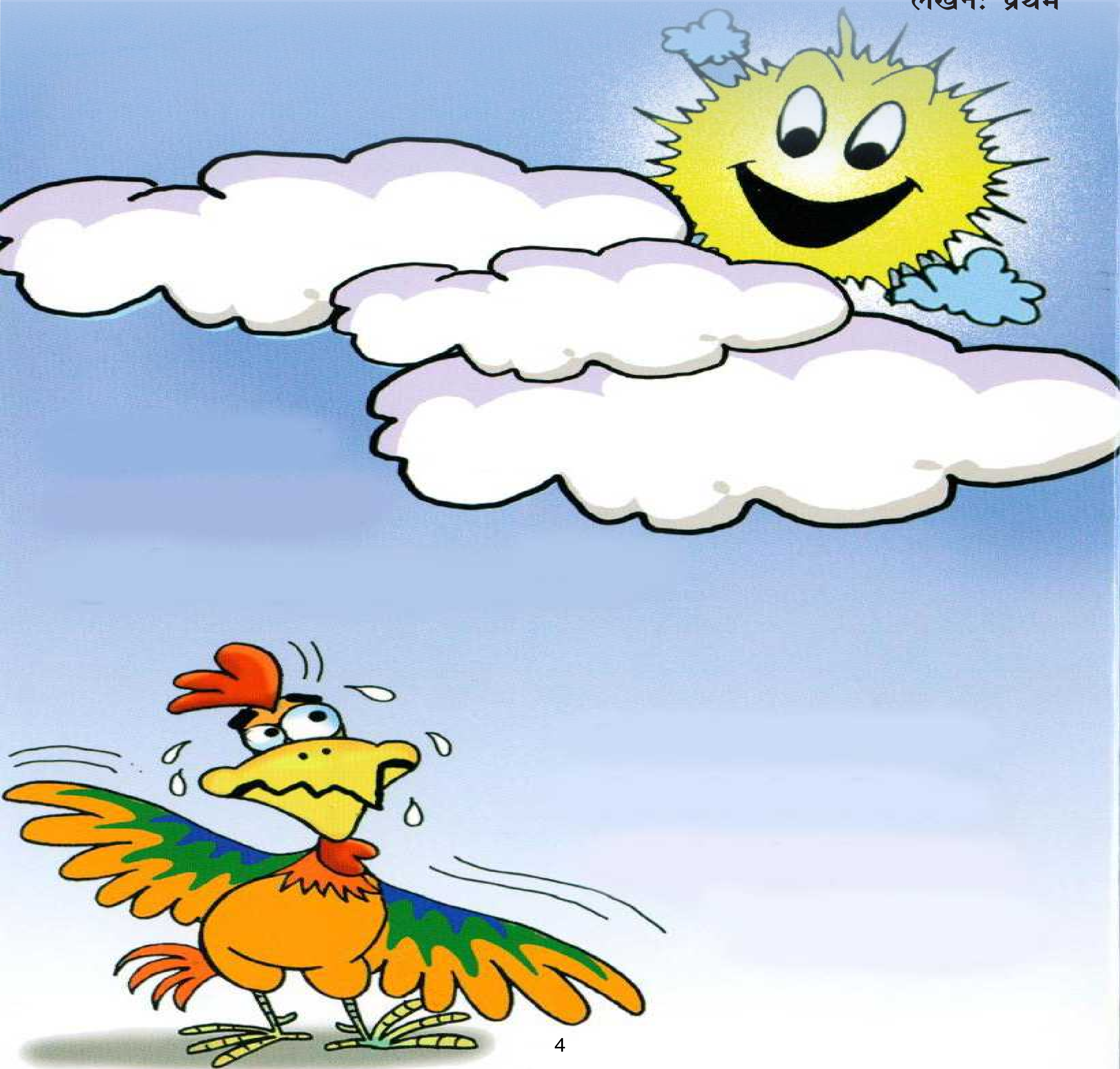

रोटी गई, रोटी आई

कमल के घर में एक कुत्ता था। उसका नाम था भौंकू! एक दिन कमल भौंकू को रोटी देने गया। तभी बंदर उसकी रोटी छीनकर भागा। कौए ने वह रोटी देखी। उसने बंदर से रोटी झपट ली। कौआ उड़कर पीपल के पेड़ पर

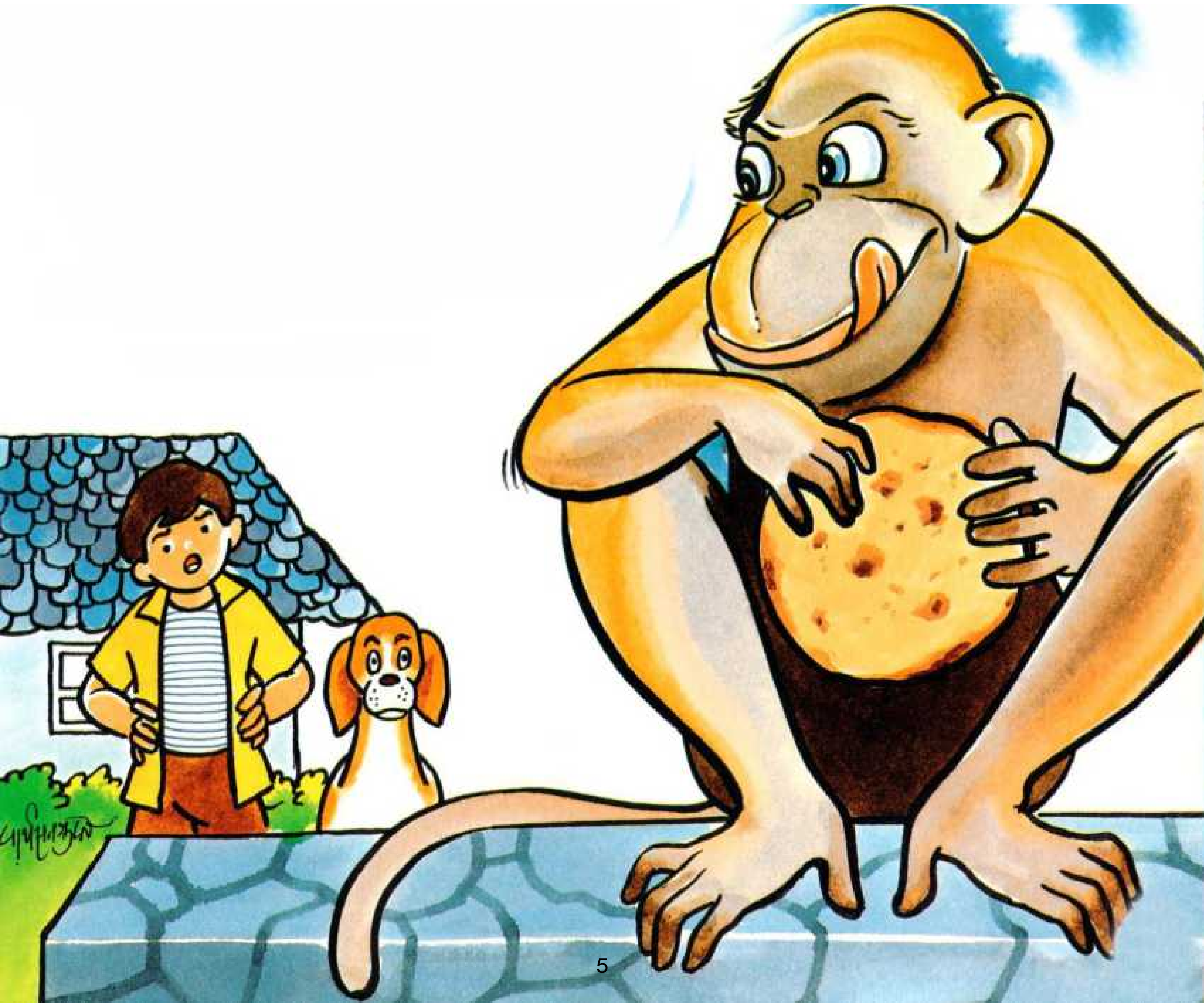

बैठ गया। पेड़ पर मोर बैठा था। कौआ रोटी बचाने के लिए उड़ा। नीचे से भौंकू ने शोर मचाया, भौं-भौं-भौं-भौं! कौआ घबरा गया। उसकी चोंच से रोटी छूट गई! भौंकू ने दौड़कर रोटी लपक ली। जिसकी रोटी थी उसको मिल गई।

चित्रांकनः पार्थासेन गुप्ता

लेखनः अमर गोस्वामी

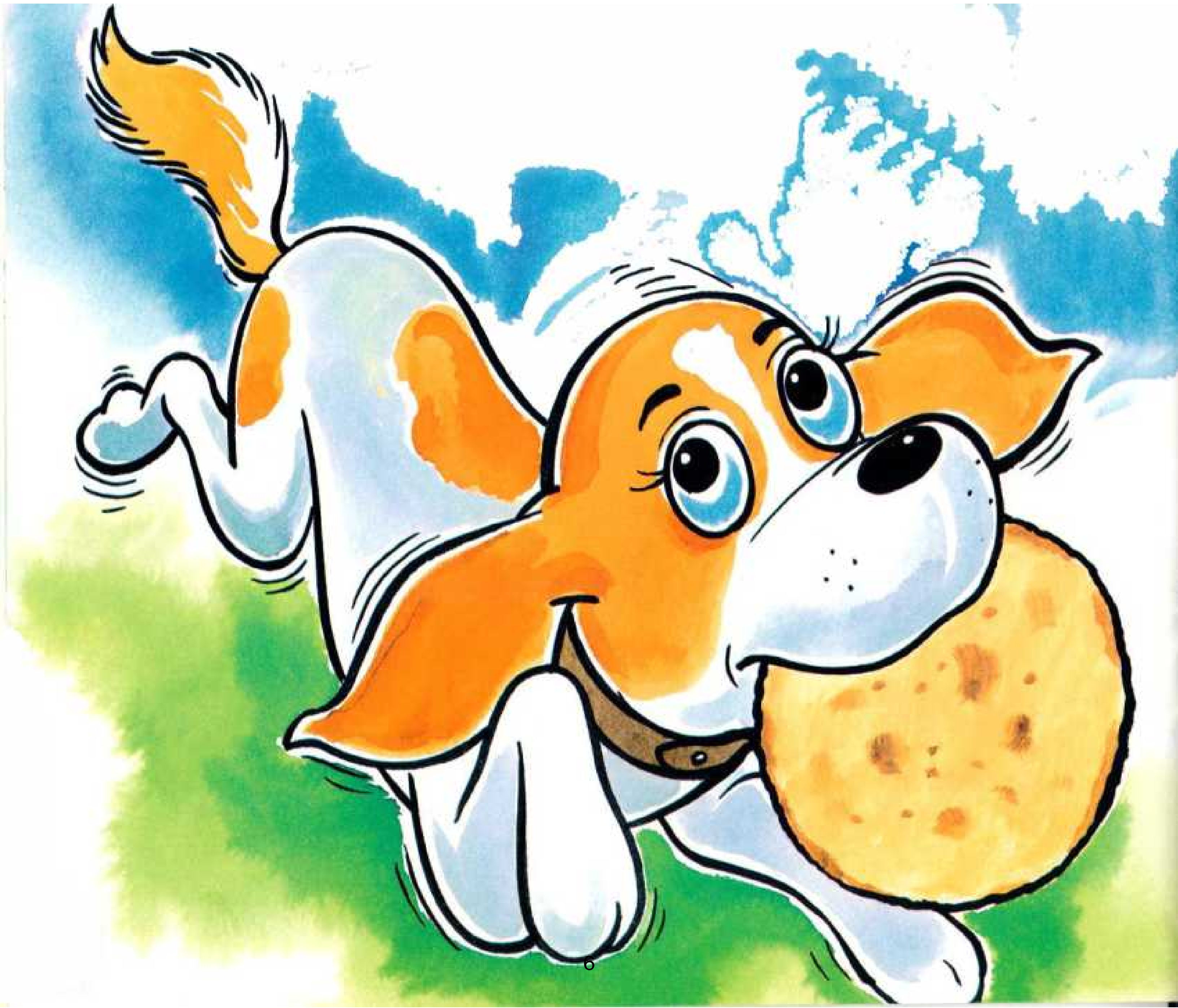

पतंग के साथ उड़ना

तेज़ हवा चल रही है। एक पतंग नीचे की ओर आ रही है। एक चिड़िया अपने छोटे बच्चों को उड़ना सिखा रही है। बच्चों को उड़ने में डर लग रहा है। माँ चिड़िया ने कहा –

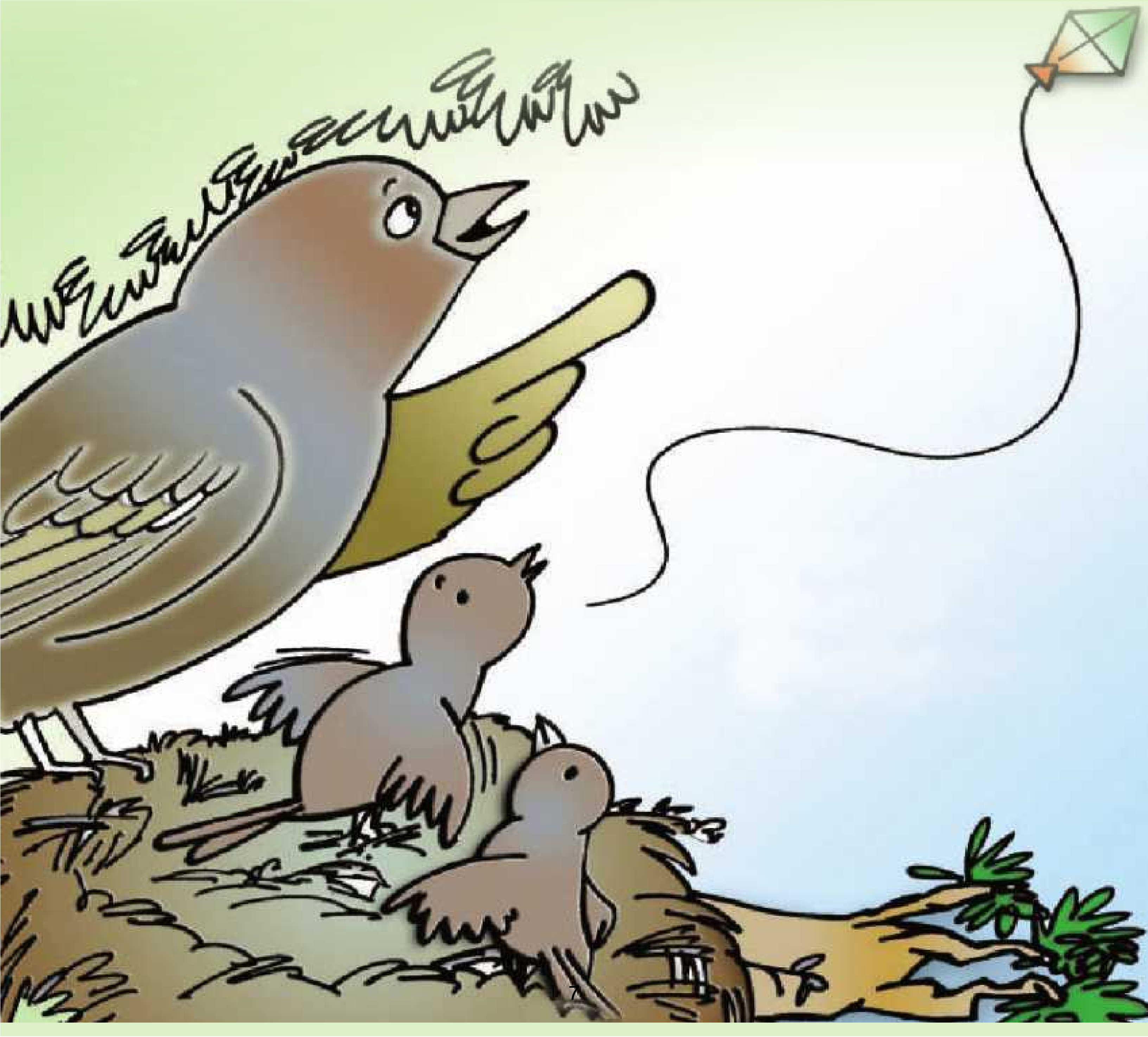

डरो नहीं। उस पतंग की डोर थाम लो। चिड़िया के बच्चों ने उड़ती पतंग की डोर पकड़ ली। उन्हें उड़ने में मज़ा आने लगा। वाह , हम तो हवा में उड़ने लगे। अचानक उनके मुँह से डोर छूट गई। हवा में पंख फड़फड़ाते हुए वे बहुत ख़ुश हैं।

चित्रांकनः अजीत नारायण

लेखनः प्रीती सलभ सक्सेना

शेर का हौदा

शेर था जंगल का राजा। एक दिन उसे शहर का राजा दिखा। राजा हाथी पर तनकर बैठा था। शेर ने भी हाथी पर बैठने की सोची। उसने अपने मन की बात सबको बताई। हौदा बनाने की तैयारी शुरू हो गई।

देखते ही देखते हौदा भी बन गया। हौदा हाथी की पीठ पर रख दिया गया। शेर उछल कर उसमें जा बैठा। हाथी के चलते ही हौदा हिलने लगा। हौदा नीचे गिर गया। शेर भी नीचे जा गिरा। उसने संभलते हुए कहा – भई पैदल चलना सबसे बढ़िया है।

चित्रांकनः पार्थासेन गुप्ता

लेखनः अमर गोस्वामी

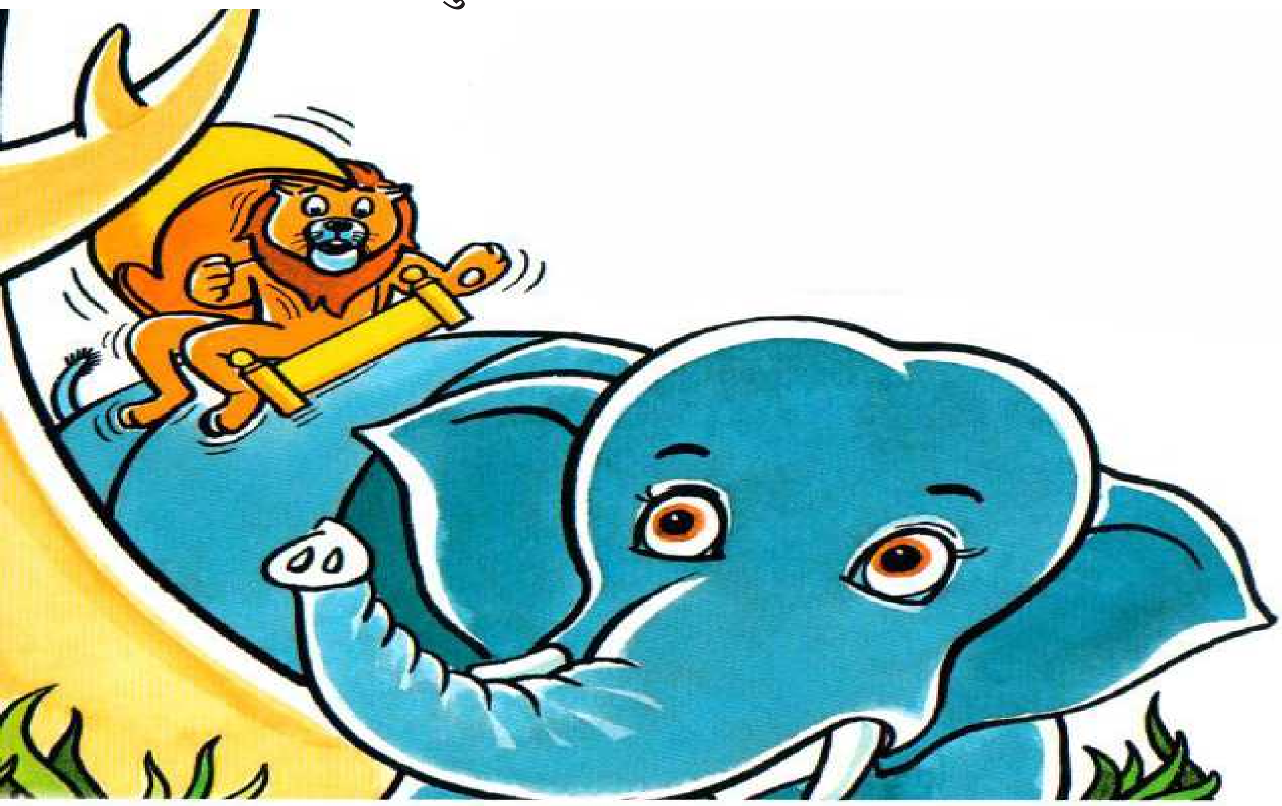

छोटी परी

एक छोटी–सी परी थी। वह हमेशा उदास रहती थी। एक दिन वह चाँद के पास गई। उसने चाँद से उसकी ख़ुशी का कारण पूछा। चाँद ने बताया वह रोज़ धरती पर जाता है। वहाँ सब उसे मामा कहते हैं।

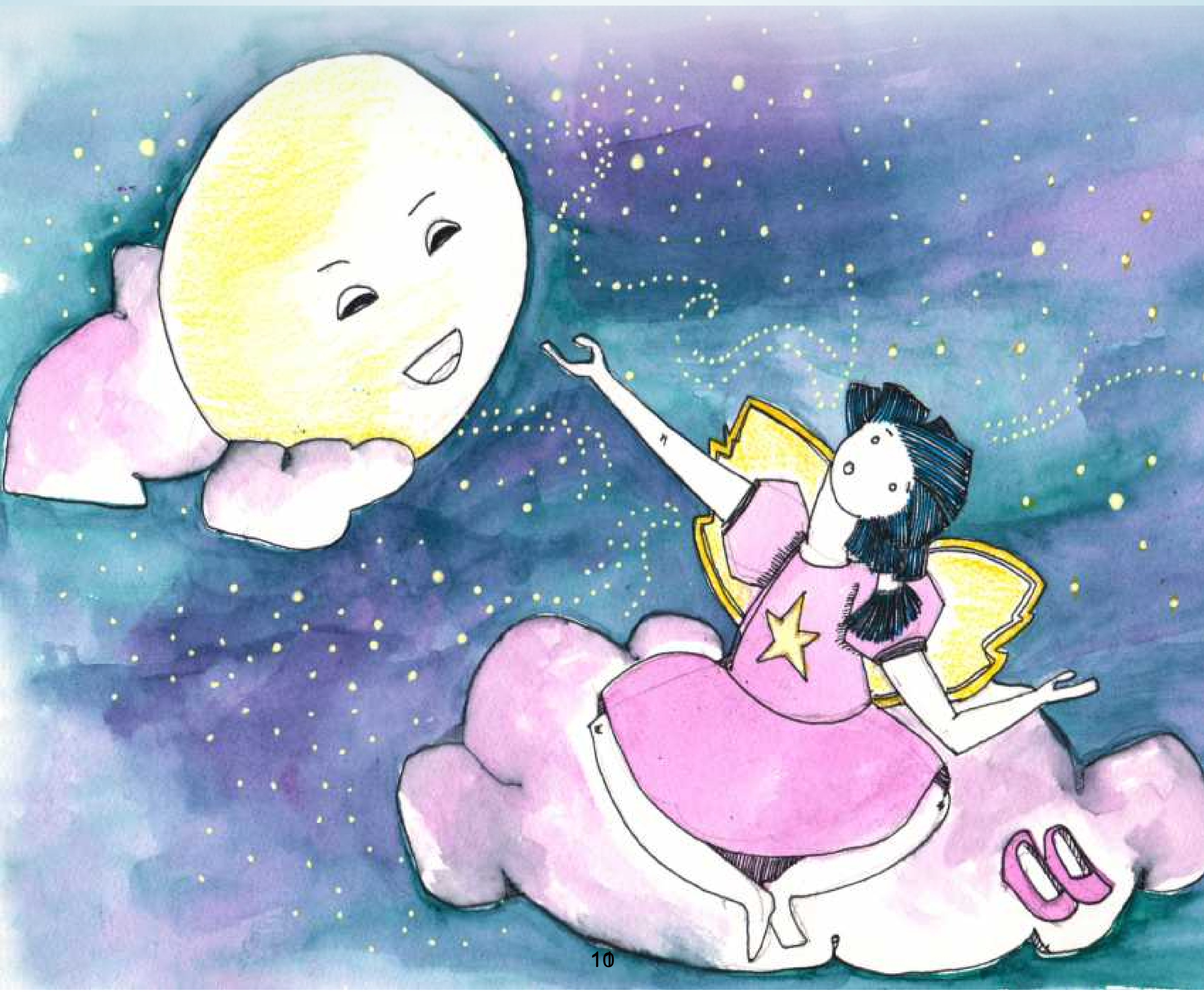

परी बोली– कल मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगी। अगले दिन परी भी उसके साथ गई। बच्चे चंदा मामा और परी को देखकर बहुत ख़ुश हुए। ख़ुश होकर वे गाना गाने लगे। चंदा मामा आए हैं, परी को साथ लाए हैं। परी भी गाना सुनकर बहुत ख़ुश हुई। अब वह उदास नहीं होती है।

लेखन: प्रथम

वह हँस दिया

हिरण का बच्चा दौड़ रहा था। वह ख़रगोश से आगे था। वह हाथी से भी आगे था। वह नाला फाँद गया। खंडहर भी पार कर गया। मैदान में पत्थर पड़ा था, ठोकर लगी तो वह गिर पड़ा। पैर में चोट लगने से रोने लगा। बंदर ने पैर सहलाया। वह चुप न

हुआ। भालू दादा ने गोद में उठाया। वह चुप न हुआ। माँ आई। वह बोली – चलो, पत्थर की पिटाई करते हैं। हिरण का बच्चा बोला – नहीं उसे मत मारना वरना वह भी रोने लगेगा। माँ हँस दी। वह भी हँसने लगा। सब हँसने लगे।

चित्रांकनः अजीत नारायण लेखनः संजीव जयसवाल (संजय)

खेल–खेल में

हाथी का बच्चा था गोलू। ख़रगोश का बच्चा था छोटू। दोनों साथ–साथ खेलते थे। एक दिन गोलू बोला – आज कोई नया खेल खेला जाए। छोटू बोला – तुम बैठो। मैं तुम्हारी पीठ के ऊपर चढ़ता हूँ। गोलू बैठ गया। छोटू ने छलाँग मारी। वह गोलू की पीठ पर पहुँच गया। अब तुम

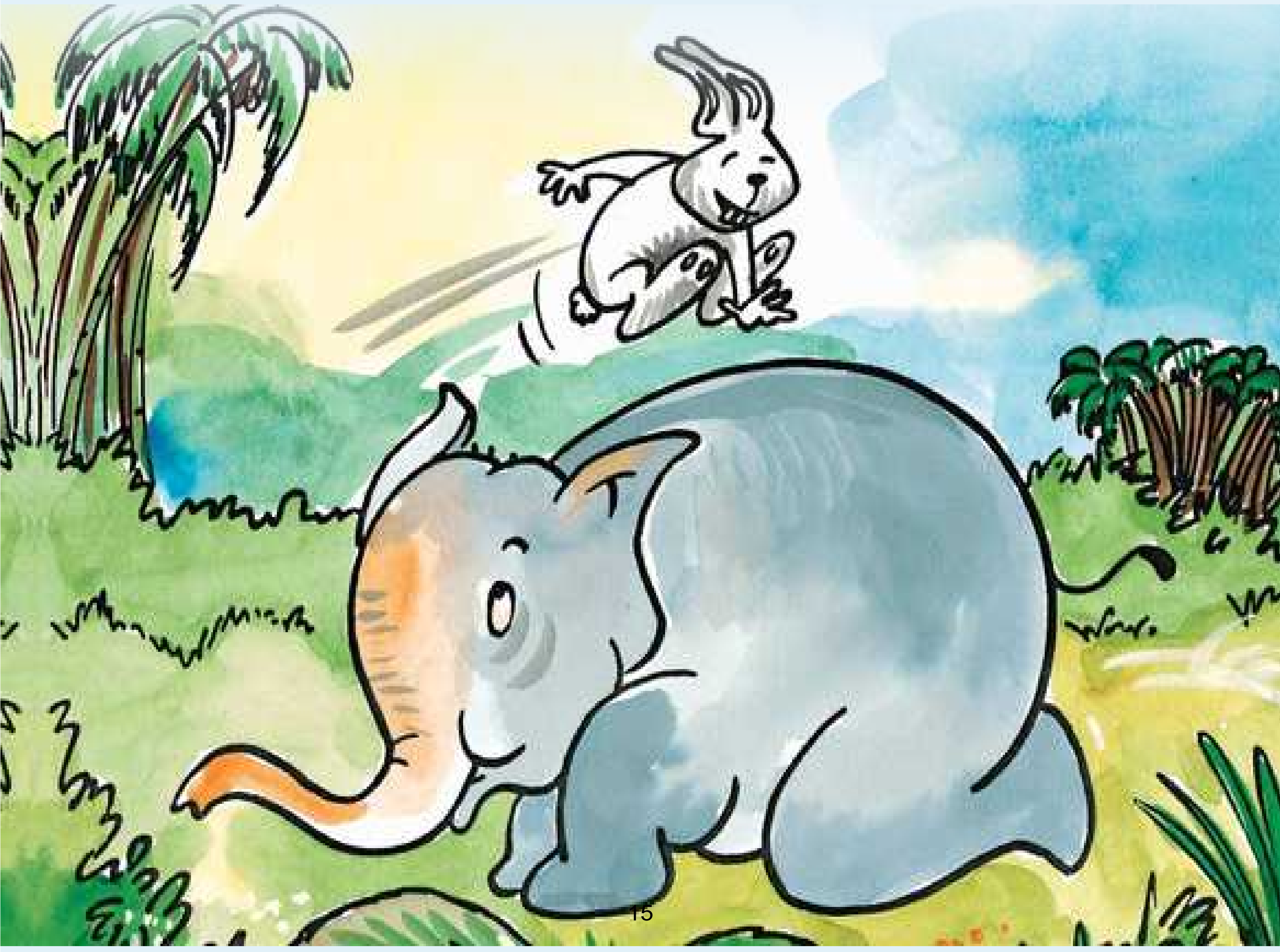

बैठो, मैं कूदूँगा – गोलू बोला। तुम! तुम कैसे कूद सकते हो? छोटू घबराया। गोलू ने कूद कर दिखाया। ऐसे!

धप...धप...धप... गोलू पर नारियल बरसने लगे। गोलू घबरा कर भाग गया। एक छोटा-सा नारियल छोटू पर भी गिरा। उसने सोचा– हाथी से ज़्यादा अच्छा है यह नारियल।

चित्रांकनः अजीत नारायण

लेखनः संजीव जयसवाल (संजय)

बंदर और हाथी

एक हाथी था। वह बग़ीचे में घूम रहा था। आम के पेड़ पर एक बंदर बैठा था। बंदर को शरारत सूझी। उसने आम खाकर गुठली हाथी पर फेंकना शुरू कर दिया। गुठली कभी हाथी के कान पर तो कभी सूँड़ पर लगती। हाथी परेशान हो गया।

हाथी ने इधर–उधर देखा। उसे पेड़ की डाल पर बंदर नज़र आया। उसने बंदर को सूँड़ में लपेट लिया। बंदर डर गया। उसने कान पकड़कर हाथी से माफ़ी माँगी। हाथी ने उसे छोड़ दिया। अब दोनों दोस्त बन गए हैं।

लेखनः प्रथम

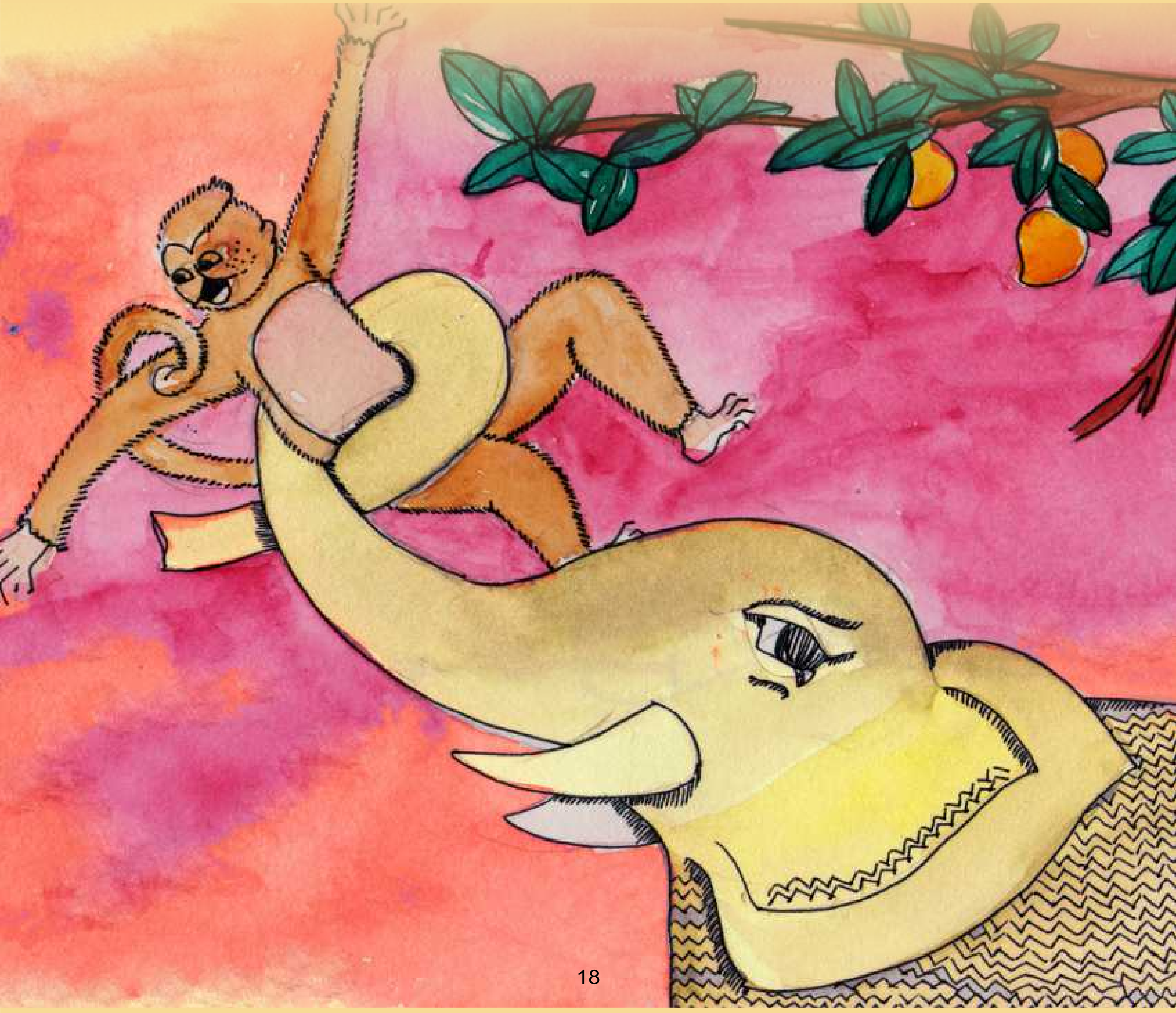

टप टप टपक

एक जंगल था। ख़ूब घना जंगल। एक दिन झमाझम पानी बरसा। थोड़ी देर बाद बारिश रुक गई। सारे जानवर बाहर निकले। तभी आवाज़ आई – टप–टप–टपक। सब घबरा गए।

सबने सोचा यह कैसी आवाज़ है? सारे बड़े जानवर डर कर भाग गए। चींटी ने कहा – चलो साथियो, हम

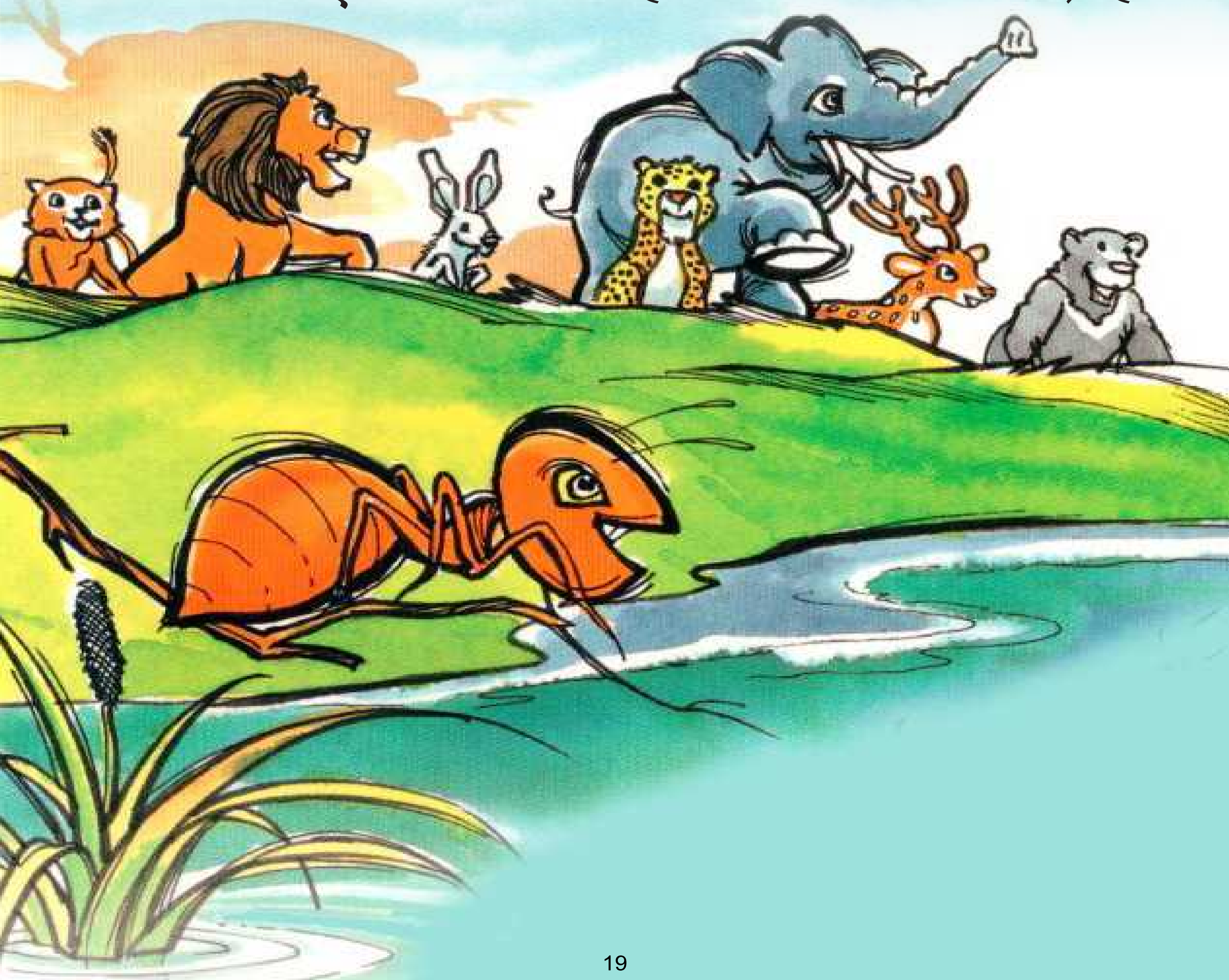

टप-टप-टपक को ढूँढें। चूहा बोला - शाबाश चींटी बहन! जुगनू बोला - मैं आगे रहूँगा। बिल्ली बोली - मैं साथ हूँ। ख़रगोश ने कहा - मैं भी पीछे नहीं रहूँगा। सब टप-टप-टपक को ढूँढने चले। फिर सबने देखा, बरसात का पानी पत्तों पर टपक रहा था... टप-टप-टपक।

चित्रांकनः साउ किमसन

लेखनः अमर गोस्वामी

मोटा राजा दुबला कुत्ता

यह है मोटा राजा। मोटे राजा का है दुबला कुत्ता। एक बार की बात है। मोटा राजा और दुबला कुत्ता घूमने निकले। दुबले कुत्ते ने चिड़िया देखी। वह उसके पीछे भागा। मोटा राजा भी दुबले कुत्ते के पीछे भागा।

दोनों भागे। दोनों कई दिनों तक भागते रहे! आख़िर मोटे राजा ने दुबले कुत्ते को पकड़ ही लिया। मोटा राजा अब दुबला हो गया है।

चित्रांकनः परिस्मिता

लेखनः परिस्मिता

ख़ुशबू

ख़ुशबू सारा दिन अपना अंगूठा चूसती रहती है। एक दिन वह चिड़ियाघर गई। उसने वहाँ हाथी का बच्चा, हिरन का बच्चा और छोटी-सी बंदरिया देखी।

ख़ुशबू उन्हें देखकर सोचने लगी। सभी कितना मज़े से खेल रहे हैं। तभी उसने देखा, एक बच्चा पापा के कंधों

पर बैठकर हवा में हाथ लहरा रहा है। एक लड़की फ़ोटो खींच रही है। कुछ बच्चे एक दूसरे का हाथ पकड़कर कूद रहे हैं। ख़ुशबू ने झट से अपना अंगूठा मुँह से निकाला। वह दौड़कर मम्मी-पापा के पास गई। दोनों का हाथ पकड़कर ज़ोर-ज़ोर से झूलने लगी।

चित्रांकन: शुभाश्री माथुर

लेखन: प्रथम

मेरा दोस्त

मेरे बहुत सारे दोस्त हैं। मेरे कुछ दोस्त बड़े हैं। मेरे कुछ दोस्त छोटे हैं। मेरे कई दोस्त बूढ़े भी हैं। मेरे कुछ दोस्त नन्हें-मुन्ने भी हैं।

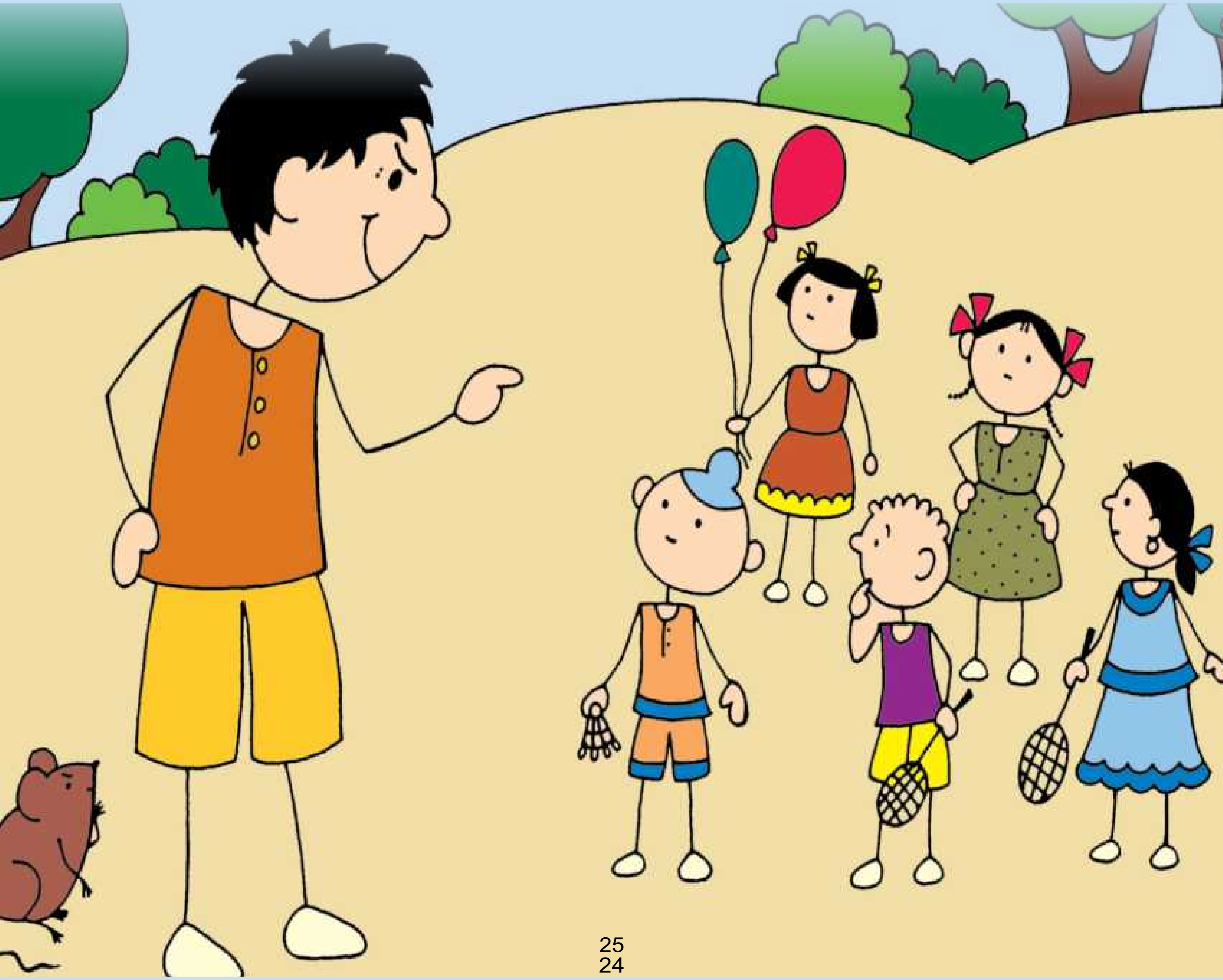

मेरे कुछ दोस्त ऐसे भी हैं जिनकी ... पूँछ भी है। कुछ ऐसे दोस्त हैं जिनके पैर ही नहीं हैं।

मेरे कुछ दोस्त उड़ते हैं। मेरे कुछ दोस्त तैरते भी हैं।

ओह! हो! किताबें भी तो मेरी दोस्त हैं।

लेकिन, मेरा सबसे अच्छा दोस्त कौन है? कौन? कौन? कौन? मेरी माँ!

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री लेखनः रुक्मिणी बनर्जी

नटखट कुत्ता

हमारे परिवार में चार लोग हैं। मम्मी, पापा, मैं और चिंकू। चिंकू जहाँ जाता है मैं उसके पीछे-पीछे जाता हूँ। मुझे चिंकू की देखभाल करनी पड़ती है। मैं उससे बड़ा जो हूँ। चिंकू कभी-कभी लापरवाही करता है। घर की चौकीदारी मुझे ही करनी पड़ती है।

हम एक साथ काम करते हैं। खेलते भी साथ-साथ हैं। माँ से हमें डाँट भी बराबर पड़ती है। जब चिंकू स्कूल में होता है तब मैं माँ की मदद करता हूँ। मैं कौओं को पापड़ से दूर रखता हूँ। मैं एक अच्छा कुत्ता हूँ। मैं बिल्लियों को डराता नहीं हूँ।

चित्रांकन: दीपा बलस्वार

लेखन: कंचन बैनर्जी

आलू-मालू-कालू

मालू आज पहली बार बग़ीचे से सब्ज़ी तोड़ने गया। मालू ने तोड़े लाल टमाटर, लम्बे बैंगन और हरी-भरी भिण्डी। दादी ने कहा - शाबाश मालू! जाओ थोड़े आलू भी ले आओ। मालू ने सारे पेड़, बेलें और पौधे देखे। आलू कहीं दिखाई नहीं दिए। वह बोला - दादी, आलू अभी उगे नहीं। नहीं

मालू, बहुत आलू उग रहे हैं, ध्यान से देखो। दादी ने समझाया। मालू फिर गया बग़ीचे में। पीछे-पीछे कालू भी चल पड़ा। मालू आलू खोजने लगा। तभी 'भौं, भौं' की आवाज़ सुनाई दी। ओ हो! रुक-रुक कालू, मालू दौड़ा। बग़ीचा ख़राब मत कर। मालू ने देखा, कालू ने गड्ढा खोदा हुआ था। खुदी मिट्टी में थे मोटे-मोटे आलू! वाह कालू! ढूँढ निकाले आलू-टोकरी भर कर बोला मालू।

चित्रांकन: सुविधा मिस्त्री

लेखन: विनिता कृष्णा

अभी नहीं, अभी नहीं!

राहुल ने अज्जी से पूछा – क्या मैं कुछ लड्डू खा लूँ? अभी नहीं बेटा कल खा लेना। राहुल ने मम्मी से पूछा – क्या मैं ये नए कपड़े पहन लूँ? अभी नहीं बेटा, कल पहन लेना। मैं कल तक रुकना नहीं चाहता।

उसने पापा से पूछा – क्या मैं उस सुंदर से डिब्बे को खोल लूँ? नहीं, नहीं। तुम्हें थोड़ा रुकना पड़ेगा! लेकिन

मैं रुकना नहीं चाहता। बड़े हमेशा क्यों कहते हैं, अभी नहीं, अभी नहीं?

उस रात राहुल ग़ुस्से में सो गया। अगले दिन अज्जी ने कहा – तुम ये लड्डू खा सकते हो। मम्मी ने कहा – अब तुम ये कपड़े पहन सकते हो। पापा ने कहा – तुम यह डिब्बा खोल सकते हो! सभी एक साथ बोले – राहुल जन्मदिन बहुत–बहुत मुबारक हो!

चित्रांकनः रूचि शाह

लेखनः रोहिणी नीलकानी

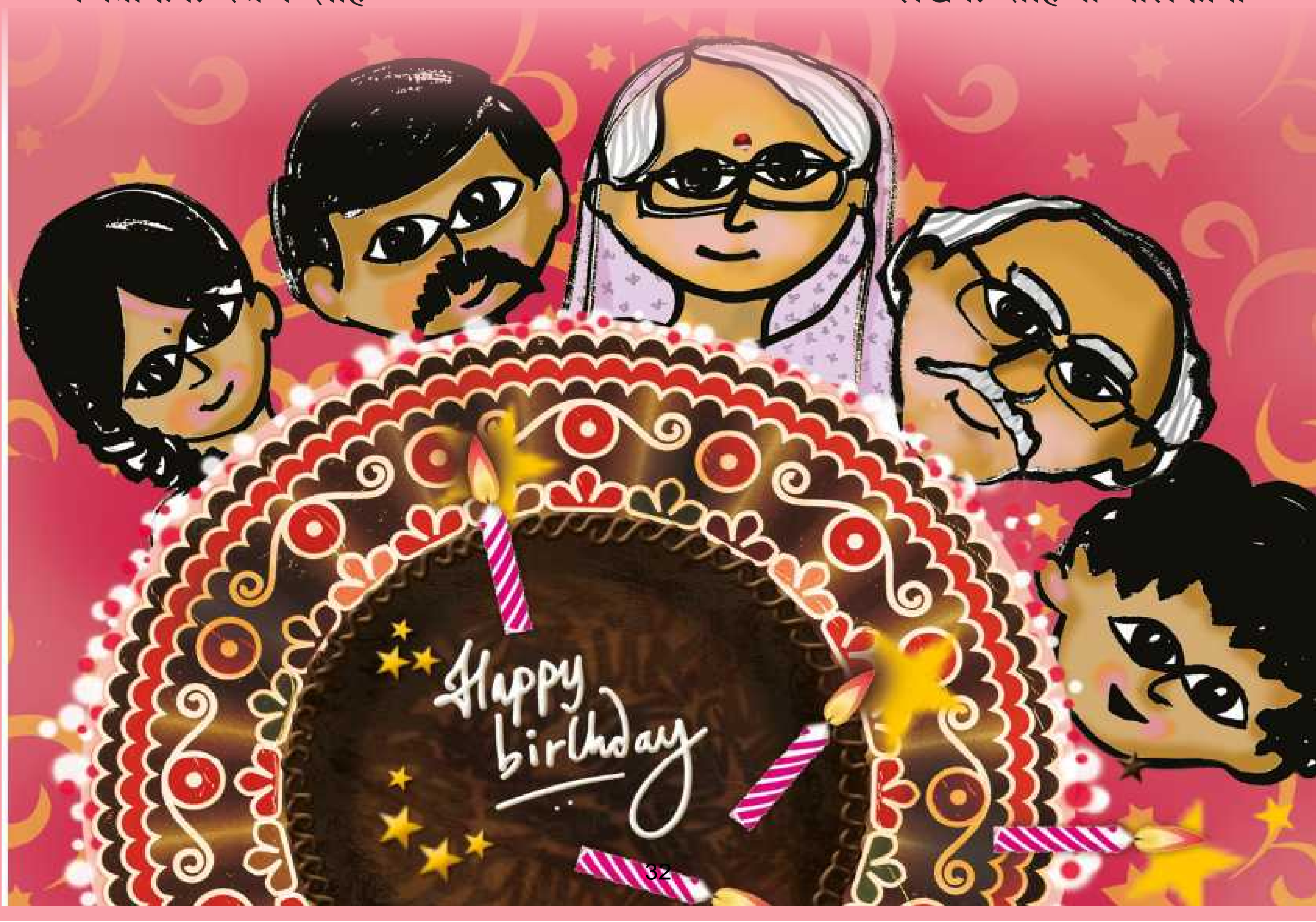

चाँद का तोहफ़ा

हम सब दशहरे का मेला देखने गए। पापा ने चिन्टू के लिए ख़ूबसूरत चश्मा ख़रीदा। मेरे लिए एक चमकती नीली टोपी ख़रीदी। घर जाते समय ज़ोर की हवा चली। वह मेरी टोपी उड़ा ले गई। टोपी पुराने पीपल की डाल पर लटक गई। मैं ख़ूब रोया।

मैंने रात का खाना भी नहीं खाया। देर रात में, चाँद निकला। उस ने मेरी टोपी पहन रखी थी। वह ख़ुशी से मुस्कराया। मैं भी मुस्कराया। अगले दिन माँ ने मुझे एक नई लाल टोपी दी। उस रात चाँद और मैंने अपनी-अपनी टोपियाँ पहनीं और मुस्कराए। हम ख़ुश थे। आपका क्या ख़्याल है? क्या सूरज को टोपी की ज़रूरत है?

चित्रांकनः अंगी और उपेश

लेखनः रोहिणी नीलकानी

सूरज और शेर सिंह

सूरज के पास एक गेंद है। वह गेंद शेर के जैसी दिखती है। वह उसे शेर सिंह बुलाता है। एक दिन सूरज और शेर सिंह खेल रहे थे। तभी शेर सिंह हवा में उछला। फिर सीधे पानी में गिर गया। छपाक!

एक कुत्ते ने शेर सिंह को मुँह में दबोच लिया। शेर सिंह ने अपने दोनों हाथों से कुत्ते का मुँह खोला और बाहर कूद

गया। वह एक फिसलपट्टी पर जा गिरा। वह ज़ूँ ... से नीचे फिसल गया। उसके पीछे एक मोटा लड़का भी फिसल रहा था। धम्म! मोटा लड़का शेर सिंह पर आ गिरा। शेर सिंह पिचक गया। शेर सिंह ने मोटू को चुटकी काटी! फिर शेर सिंह एक सुरंग में जा गिरा। वहाँ वह गोल–गोल घूमा।

सुरंग से बाहर निकलते ही उसे सूरज मिल गया। सूरज ने शेर सिंह को गोद में उठा लिया।

चित्रांकनः सुविधा मिस्त्री

लेखनः अनुपा लाल

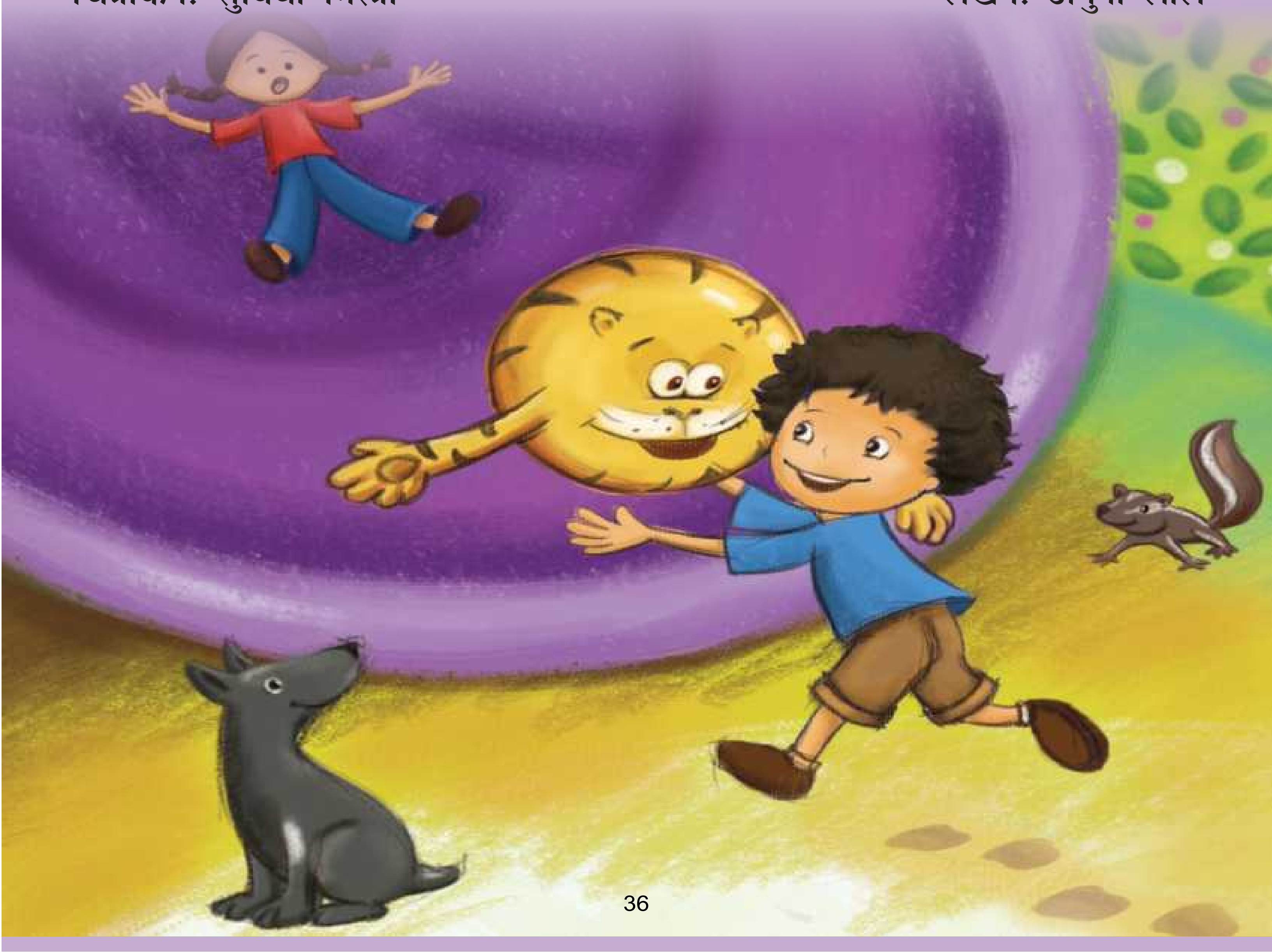

भीमा गधा

आज फिर भीमा को अपने मालिक से डाँट पड़ी। उसकी आँख आज भी नहीं खुली थी। इसलिए भीमा गधा बहुत उदास था। पड़ोस की गाय गौरी ने पूछा - भीमा तुम उदास क्यों हो? भीमा ने बताया - मेरी नींद नहीं खुलती। गौरी ने समझाया - कोई बात नहीं, मैं तुझे उठा दूँगी।

दूसरे दिन गौरी रंभाती रही पर भीमा नहीं जागा। भीमा चीनू मुर्गे से मिला। भीमा बोला – तुम्हारी आवाज़ से तो सुबह सभी जाग जाते हैं। तुम मुझे भी जगा देना। चीनू बोला–ठीक है। अगली सुबह चीनू 'कुकड़ू–कूँ, कुकड़ू–कूँ' बाँग लगाता रहा। मगर भीमा पर कोई असर नहीं हुआ। भीमा ने कालू कौए को काँव–काँव करते देखा। उसने कौए से भी यही कहा। अगले दिन कालू 'काँव...काँव' करता रहा पर भीमा नहीं जागा। भीमा निराश हो गया। अगले दिन सुबह–सुबह एक मक्खी उसकी नाक पर जा बैठी। आ...आ... आक छीं! छींक आते ही भीमा की नींद खुल गई।

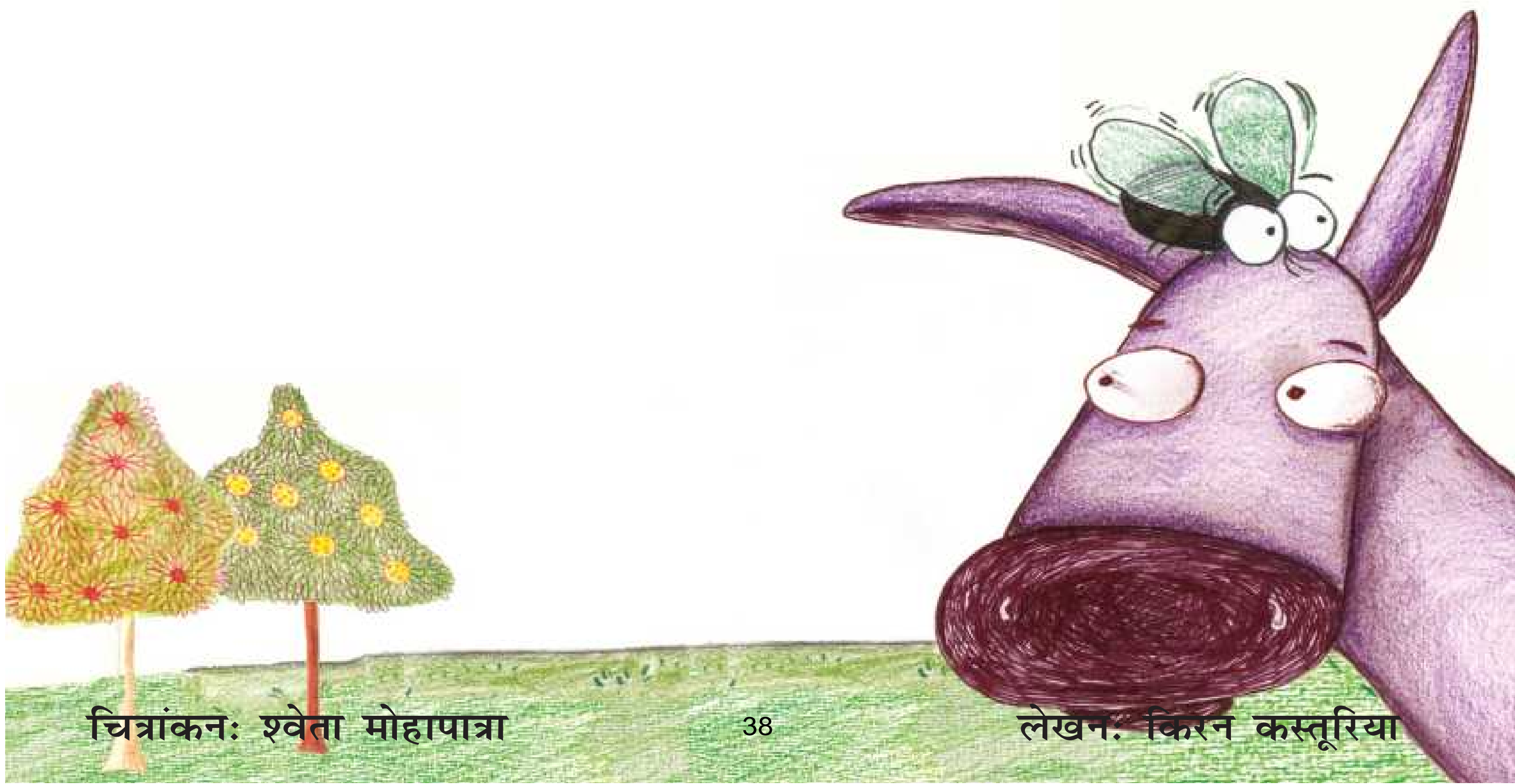

चित्रांकनः श्वेता मोहापात्रा

लेखनः किरन कस्तूरिया

नकलची मूमू

एक थी मूमू। वह जब भी किसी को कुछ करते देखती, खुद भी वही करने लगती। एक दिन वह तालाब पर गई। वहाँ एक लड़की नाव चला रही थी। तालाब के किनारे कुछ बच्चे खेल रहे थे। तभी उसकी नज़र दो बत्तख़ों पर पड़ी। वे दोनों तालाब में तैर रही थीं। बत्तख़ों की माँ किनारे पर टहल रही थी। मूमू उन्हें ग़ौर से देखने लगी। उन्हें देखकर उसका भी मन तैरने को किया। मूमू ने बत्तख़ों की माँ से पूछा–मैं भी

पानी में तैर सकती हूँ। बत्तख़ की माँ ने कहा – तुम्हें तैरना आता हो तो तैर सकती हो। मूमू दौड़कर पानी में कूद गई। उसे तैरना नहीं आता था। वह पानी में डूबने लगी। वह ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाने लगी। 'बचाओ बचाओ।' बत्तख़ की माँ पानी में गई। वह मूमू को बचा कर बाहर ले आई। अब मूमू किसी की नक़ल नहीं करती।

चित्रांकनः चिंग चिंग ली, मेरी वून

लेखनः एनी बेसेंट

बंटी और बबली

बंटी को तितलियों के साथ खेलना अच्छा लगता है। वह चिड़ियों के साथ भी खेलती है। उसे कागज़ की नाव बनाना भी अच्छा लगता है। उसे रेत के क़िले बनाने में मज़ा आता है। खेलने के बाद माँ बंटी को हाथ-मुँह धोने के लिए कहती है। बंटी उनकी बात नहीं मानती। उसे साबुन अच्छा नहीं लगता। एक रात उसने सपना देखा। उसके रेत के क़िले को

कीड़ों और कीटाणुओं ने घेर लिया है। सबने क़िले पर हमला कर दिया। कीटाणु बंटी के पीछे पड़ गए। वह जान बचाने के लिए भागी और चिल्लाई – बचाओ... बचाओ ...! तभी साबुन राजा अपनी झाग की सेना लेकर वहाँ पहुँच जाते हैं। वे अपनी सेना के साथ कीटाणुओं पर हमला बोल देते हैं। झाग सेना झट से कीटाणुओं को सफ़ाया कर देती है। आजकल बंटी को नहाने में मज़ा आता है। वह दाँत साफ़ करती है और मल–मल कर नहाती है।

चित्रांकनः सोरित गुप्तो

लेखनः सोरित गुप्तो

मुझे वह वाला चाहिए!

अम्मा की छुट्टी का दिन था। वह एक पुस्तक पढ़ रही थीं। अनिल की भी छुट्टी थी। वह अम्मा से बोला – उस नीले बक्से में क्या है? मुझे वह देखना है। अम्मा बोलीं – बाद में देख लेना। अनिल कुरसी पर चढ़कर बक्सा उतारने लगा। अम्मा चिल्लाईं। अनिल माँ से बहुत गुस्सा हो गया। अम्मा अनिल को लेकर बाज़ार गईं। अनिल बाज़ार में भी गुस्से में था। उसने एक संतरे की ओर इशारा किया – मुझे वह वाला चाहिए। सभी संतरे नीचे गिर जाएँगे – दुकानदार बोला।

अनिल का मन ख़राब हो गया। तभी उसे फूलों की टोकरी दिखी। वह फूल लेने दौड़ा। बेटा, फूलों को हाथ नहीं लगाना! फूल मुरझा जाएँगे – फूलवाली ने कहा। अनिल ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। पास ही में टोकरी में बहुत सारे पिल्ले थे। काला पिल्ला नीचे था। तभी अम्मा बोली – मुझे काला पिल्ला चाहिए। अनिल ने अचानक से रोना बंद कर दिया। नहीं, अम्मा वह वाला नहीं यह भूरा वाला ले लेते हैं। अनिल ने बड़े प्यार से पिल्ला उठाया। मैं तुम से बहुत गुस्सा हूँ, अम्मा! सारे पिल्ले ही नीचे गिरा देतीं। अम्मा मुस्कराने लगीं।

चित्रांकन: सोम्या मेनन | लेखन: माला कुमार

मेरी, नहीं, मेरी मछली!

एक सुबह किच्चू जल्दी उठा। उसने कहा – चल कर थोड़ी मछलियाँ पकड़ी जाए। तालाब के रास्ते में उसे चोरू मिल गया। वे दोनों पक्के दोस्त हैं। सारा दिन एक साथ खेलते हैं। मुनिया ने उन्हें साथ मछली पकड़ने की बंसी ले जाते हुए देखा।

हम मछली पकड़ने तालाब जा रहे हैं। तुम भी हमारे साथ चल सकती हो? छोटी मुनिया ने कुछ देर सोचा और बोली – बिना पानी के तो मछलियाँ मर जाएँगी। उन्होंने मुनिया की बात नहीं सुनी। वे सीधे तालाब की ओर गए।

मछलियाँ तैरती हुई निकलीं। एक मछली पतली थी और दूसरी गोल। तभी तीसरी मछली आई। आज तक उन्होंने इतनी बड़ी मछली नहीं देखी थी!

दोनों ने अपनी–अपनी बंसी कस कर पकड़ी। किच्चू चिल्लाया – मेरी मछली। चोरु भी चिल्लाया – नहीं... मेरी मछली।

किच्चू ने ज़ोर से खींचा... चोरु ने भी ज़ोर से खींचा...। दोनों की बंसी टूट गई। किच्चू ज़मीन पर गिर पड़ा। चोरु पानी में गिर गया।

यह कैसे हुआ? मछलियों ने दोनों की रस्सियाँ बाँध दी थीं।

चित्रांकनः सौम्या मेनन

लेखनः सूरज जे मेनन

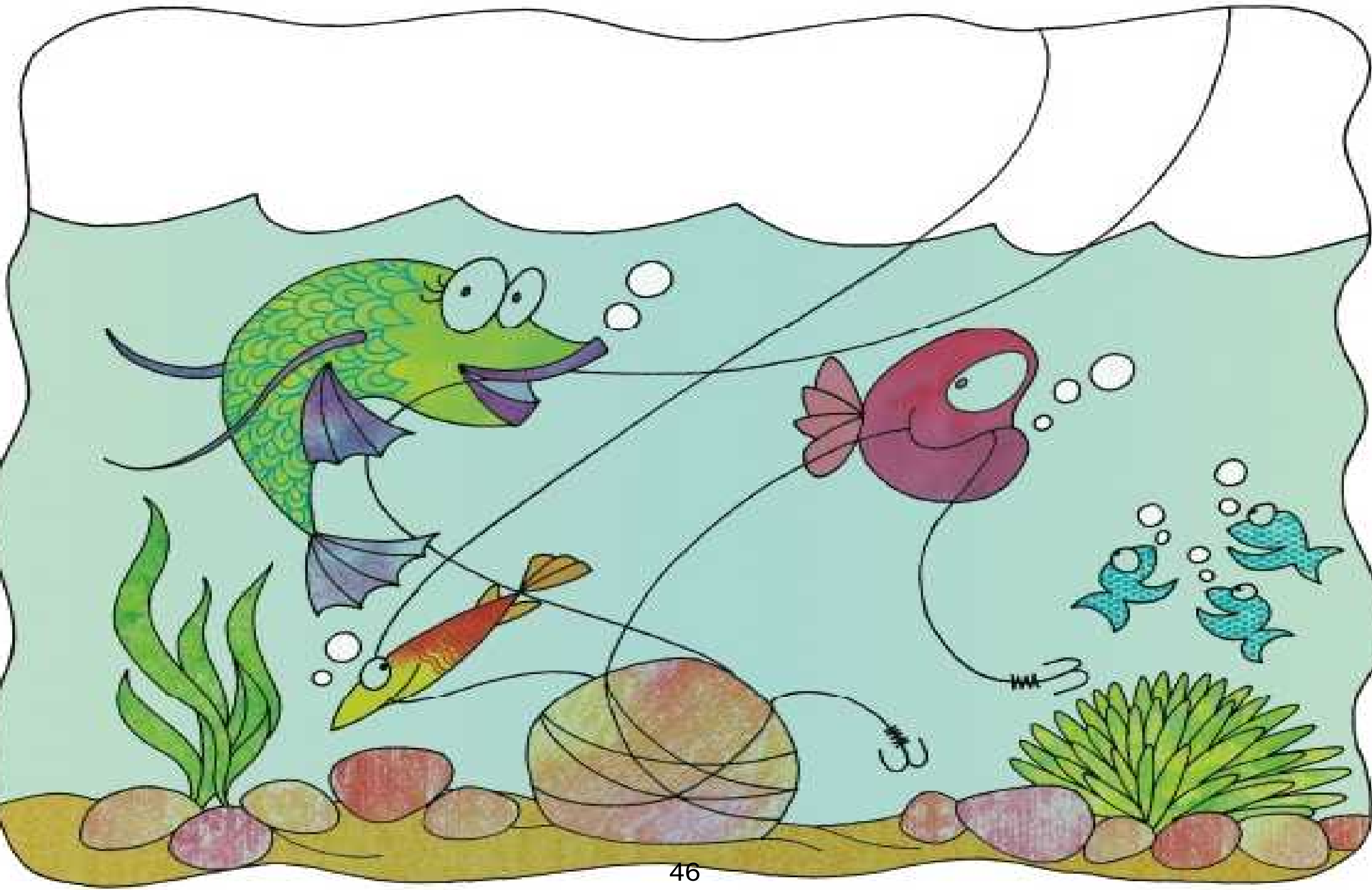

आज बहुत ठंड है

सुबह बहुत ठंड थी। घना कोहरा भी था। छुट्टी के बाद स्कूल खुलने वाला था। चुनमुन अभी भी सोना चाहती थी। उसका उठने का मन नहीं कर रहा था। माँ ने आवाज़ भी नहीं लगाई। पता नहीं माँ ने क्यों नहीं जगाया? चुनमुन ने सोचा – लगता है माँ भूल गई है। कुछ देर और सो लिया जाए। थोड़ी देर बाद चुनमुन को लगा कि अब

तो देर हो ही जाएगी। ख़ुद ही उठ जाना चाहिए। आँख मलते हुए चुनमुन माँ के पास दूसरे कमरे में पहुँची। उसने बड़ी मासूमियत से माँ से पूछा - आज आपने जगाया क्यों नहीं? माँ ने प्यार से सिर पर हाथ फेरते हुए कहा - दो दिन छुट्टी बढ़ गई है। फिर क्या था चुनमुन दुबक गई फिर से रज़ाई में।

चित्रांकनः शुभाश्री माथुर

लेखनः रिचा चिंतन

मेरा नाम रूपा है।
मुझे जलेबी बहुत पसंद है।
मेरे बाबा जलेबी लाते हैं।
मैं मज़े से जलेबी खाती हूँ।

सूरज निकल आया है।
चारों ओर उजाला फैला है।
अंधेरा मिट चुका है।
बच्चे स्कूल जा रहे हैं।

बारिश का मौसम आया।
ढेर सारी खुशियाँ लाया।
पानी में हम बहुत खेलेंगे।
गरम-गरम पकौड़ियाँ खाएँगे।

एक बहुत बड़ा बग़ीचा है।
बग़ीचे में बहुत सारे पेड़ हैं।
पेड़ों में फल लगे हैं।
कुछ फल मीठे कुछ खट्टे हैं।

चारों ओर बहुत सारे पेड़ हैं।
पेड़ों पर चिड़ियाँ रहती हैं।
चिड़ियाँ दाना चुगती हैं।
वे नदी में पानी पीती हैं।

समीर नाम का एक लड़का है।
वह रोज़ अपने स्कूल जाता है।
रोज़ नई कहानियाँ पढ़ता है।
वह सब को कहानियाँ सुनाता है।

मंगल नाम का एक लड़का है।
नदी किनारे उसका घर है।
वह रोज़ नदी में नहाने जाता है।
नदी में नहाना उसे अच्छा लगता है।

मैं एक छोटी-सी तितली हूँ।
मुझे फूलों का रस पसंद है।
बच्चे मुझे पकड़ना चाहते हैं।
मैं किसी के हाथ नहीं आती हूँ।

गाँव में बहुत सारे मोर हैं।
मोर के पंख बहुत सुंदर हैं।
आकाश में जब बादल छाते हैं,
मोर पंख फैलाकर ख़ूब नाचते हैं।

सुमन नाम की एक लड़की है।
सुबह उठकर मुँह धोती है।
नाश्ता करके स्कूल जाती है।
शाम में वह खेलती है।

सोनी आँगन में खेल रही थी।
तभी एक परी आकाश से उतरी।
सोनी को आकाश में ले गई।
दोनों आकाश में साथ-साथ खेलने लगे।

बहुत ही सुहाना मौसम है।
कोयल कुहू-कुहू कर रही है।
उसका रंग काला है।
वह रोज़ गाना गाती है।

पिताजी जंगल जाते हैं।
जंगल से लकड़ी लाते हैं।
लकड़ी बाज़ार में बेचते हैं।
मेरे लिए नई किताबें लाते हैं।

मेरे चाचाजी किसान हैं।
खेत में धान उगाते हैं।
जब बारिश होने लगती है,
धान का पौधा लहलहाता है।

रवि के पास एक कुत्ता है।
वह रोज़ उसे घुमाने ले जाता है।
कुत्ता घर की रखवाली करता है।
रवि उससे बहुत प्यार करता है।

सुबह ख़ूब बारिश हुई है।
धान के खेत में पानी भर गया है।
फ़सलों में हरियाली आई है।
किसान फ़सल देखकर ख़ुश हैं।

मेरे शिक्षक बहुत अच्छे हैं।
वे कभी नहीं डाँटते।
मुझे प्यार से समझाते हैं।
उनसे पढ़ना अच्छा लगता है।

राजू के घर में एक गाय है।
गाय का रंग काला है।
राजू उसे रोज़ घास खिलाता है।
वह रोज़ दूध देती है।

बसंत का महीना है।
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं।
फूलों पर भँवरे मंडरा रहे हैं।
तितलियाँ फूलों पर बैठी हैं।

भरत एक अच्छा लड़का है।
वह रोज़ पाठशाला जाता है।
उसे कविताएँ अच्छी लगती है।
वह सब को कविताएँ सुनाता है।

मीनू का घर बहुत बड़ा है।
घर के पास एक फुलवारी है।
वहाँ बहुत से फूल खिले हैं।
फूलों पर भँवरे बैठे हैं।

हमारे घर के पास एक तालाब है।
तालाब बहुत सुंदर और बड़ा है।
उसके किनारे रंग-बिरंगे फूल खिले हैं।
उसमें बहुत सारी मछलियाँ भी हैं।

पहाड़ पर एक पेड़ है।
पेड़ पर कई डाल हैं।
एक डाल पर एक घोंसला है।
घोंसले में एक अंडा है।

हमारे गाँव में एक घोड़ा है।
उसका रंग सफ़ेद है।
वह बहुत तेज़ दौड़ता है।
वह बहुत काम आता है।

आसमान में तारे टिमटिमाते हैं।
दिन में ये सारे छुप जाते हैं।
रात होते ही निकल आते हैं।
तारों के साथ चाँद भी दिखता है।

चाचाजी हमारे घर आए हैं।
घर में चटपटे पकौड़े बने हैं।
साथ में इमली की चटनी भी है।
सब चाय के साथ पकौड़े खा रहे हैं।

मुझे पतंग उड़ाना पसंद है।
जब तेज़ हवा चलती है,
मेरी पतंग ख़ूब ऊँची उड़ती है।
मुझे बहुत मज़ा आता है।

मेरे पास एक कुरसी थी।
उसकी एक टाँग टूट गई थी।
मैंने उसे ठीक करवा लिया।
अब मैं उस पर रोज़ बैठूँगी।

मैं मौसी के घर गई थी।
घर के सामने एक बग़ीचा है।
उसमें बच्चे खेलते हैं।
लोग उसमें घूमने जाते हैं।

रसोई में एक खिड़की है।
उससे रोशनी और हवा आती है।
जब खिड़की खोल देते हैं,
रसोई में गरमी नहीं लगती है।

नदी के किनारे एक झोंपड़ी है।
झोंपड़ी में बूढ़ी दादी रहती हैं।
उन्हें बहुत सारी कहानियाँ आती हैं।
वह सबको कहानी सुनाती हैं।

मेरा गाँव बहुत सुंदर है।
चारों तरफ़ पेड़-पौधे हैं।
गाँव में एक तालाब भी है।
तालाब में बहुत मछलियाँ हैं।

मेरे पास एक किताब है।
उसमें बहुत सारी कहानियाँ हैं।
मैं रोज़ कहानी पढ़ती हूँ।
मेरी नानी भी कहानी पढ़ती हैं।

भालू ने नाच दिखाया।
शेर को बहुत ग़ुस्सा आया।
हाथी ने उसे समझाया।
फिर सबने मिलकर गाना गाया।

घर में नानी आई हैं।
ख़ूब सारे लड्डू लाई हैं।
हम सब लड्डू खाएँगे।
दोस्तों को भी खिलाएँगे।

रघु भैया रिक्शा लेकर आए।
हम झट से उसमें बैठ गए।
दिन भर शहर की सैर की।
शाम में घर लौट आए।

आज बादल छाए हुए हैं।
लगता है बारिश होगी।
हम सब बारिश में नहाएँगे।
कागज़ की नाव भी चलाएँगे।

हम रोज़ स्कूल जाते हैं।
स्कूल में पढ़ते-लिखते हैं।
स्कूल में हम खेलते भी हैं।
हमारा स्कूल बहुत बड़ा है।

आलिया छोटी-सी लड़की है।
दिन-भर मौसी के पास रहती है।
शाम में जब माँ घर आती है,
आलिया माँ से लिपट जाती है।

आज हमने एक पौधा रोपा।
हम रोज़ उसको पानी देंगे।
उसमें थोड़ी खाद भी डालेंगे।
अगले साल वह पेड़ बन जाएगा।

मेरी एक गाय है।
वह हरी घास खाती है।
मीठा दूध देती है।
दूध से दही बनता है।

एक तौलिया और कुरते थे दो
केशव लाया था उनको धो
दो रुपये के हिसाब से रुपये दिए
बताओ कुल कितने रुपये दिए?

एक दर्जन में होते बारह केले
चुन्नू-मुन्नू बैठे खाने केले
मम्मी ने एक-एक केला पकड़ाया
बताओ बचे अब कितने केले?

पापा लाए नया कैलेंडर
उसमें नहीं था माह सितंबर
इसके आगे कौन से महीने
नहीं आते जिनमें पसीने?

हमने पाली एक बकरी
चारा खाती दिन में दो टोकरी
हफ़्ते में वह कितना चारा खाए
कोई तो मुझे यह बतलाए?

सोमवार को चढ़े ट्रेन में हम
गुरुवार को जा पहुँचे अपने शहर
सुबह, शाम, रात और दोपहर
बताओ कितने दिन किया सफ़र?

चार बजे नानी आईं।
सात बजे तक गप्पें मारीं।
आठ बजे वह चली गईं।
बताओ कितने घंटे साथ रहीं?

एक गाड़ी के थे छह डिब्बे
हर डिब्बे के थे आठ पहिए
जो भी पहियों का जोड़ बताए
कक्षा में वह नाम कमाए।

मेरी एक गाय है।
वह हरी घास खाती है।
मीठा दूध देती है।
दूध से दही बनता है।

फूलों के रस से शहद बनता है।
शहद बहुत मीठा होता है।
इसे खाने से ताक़त आती है।
शहद बीमारी को भगाता है।

मेरा नाम नीम है।
मैं खाने में कड़वा हूँ।
मैं सबको छाया देता हूँ,
और बिमारियों से लड़ता हूँ।

नदी का पानी बहता हुआ,
तालाब का पानी रुका-रुका।
झरने का पानी बहता हुआ,
कुएँ का पानी रुका-रुका।

मैंने आज चाय बनाई।
उसमें चीनी डालना भूल गई।
मैंने चाय सबको दी।
फिर भी सबने मज़े से पी।

रमन लाया रबड़ी।
अमर लाया अचार।
पूनम कचौड़ी लाई।
सबने मिल कर खाई।

मामा ने गिलहरी पाली है।
गिलहरी बहुत मोटी है।
वह दूध-रोटी खाती है।
खाकर छुप जाती है।

आज पुलाव बन रहा है।
उसमें काजू भी डाला गया।
खुशबू घर में फैली है।
पुलाव चटनी के साथ खाएँगे।

मेरे घर में एक तोता है।
वह इधर-उधर उड़ता है।
मिर्च-अमरूद खाता है।
सबका नाम लेता है।

कल माँ बाज़ार से चावल लाई।
माँ ने चावल की खीर बनाई।
खीर में बादाम भी डाले।
सबने मिलकर खीर खाई।

तितली सुंदर होती है।
यह रंग-बिरंगी होती है।
फूलों पर मंडराती है।
उनका रस चूसती है।

अनार का रंग है लाल।
आम का रंग है पीला।
केला भी है पीला-पीला।
लीची है लाल-लाल।

झूमा नाम की एक लड़की है।
उसके घर के सामने एक मैदान है।
वहाँ रोज़ छोटे-छोटे बच्चे खेलने आते हैं।
झूमा भी रोज़ उनके साथ खेलती है।

मेरे गाँव में एक तालाब है।
तालाब में बहुत सारी मछलियाँ हैं।
हम सब तालाब में नहाने जाते हैं।
हम सब मछलियाँ भी पकड़ते हैं।

मेरे पास एक कुत्ता है।
उसका नाम मोती है।
मोती दिन भर सोता रहता है।
वह रात को पहरा देता है।

राधा राम की बहन है।
वे दोनों बग़ीचे में घूमने जाते हैं।
वहाँ से गुलाब के फूल लाते हैं।
फूलों की माला बनाते हैं।

मेरे पास एक सुन्दर चादर है।
उसमें लाल-लाल फूल हैं।
छोटी-छोटी चिड़ियाँ बनी हैं।
मैं उसे ओढ़कर सोती हूँ।

राम रोज़ बाग़ में जाता है।
वहाँ से आम तोड़कर लाता है।
राम को आम बहुत पसंद है।
वह आम का रस भी पीता है।

ताजमहल बहुत बड़ा है।
यह आगरा शहर में है।
इसका रंग सफ़ेद है।
लोग यहाँ घूमने आते हैं।

पेड़ों से ही हमारा जीवन है।
इनं से हमें भोजन मिलता है।
हमें पेड़ नहीं काटने चाहिए।
अधिक पेड़ लगाने चाहिए।

आसमान नीला दिखता है।
पानी भी नीला दिखता है।
पतंग का रंग भी नीला है।
मुझे नीला रंग बहुत पसंद है।

मैं चिड़ियाघर घूमने आया।
वहाँ बहुत से जानवर देखे।
मैंने शेर को भी देखा।
वह ज़ोर से दहाड़ रहा था।

आसमान में बादल छाए थे।
थोड़ी ही देर में बारिश शुरु हो गई।
पिताजी बाज़ार से सामान लेने गए थे।
वापस आते-आते वह भीग गए।

आम रसीला है।
छिलका पीला होता है।
आम मीठा-मीठा होता है।
फलों का राजा कहलाता है।

मीनू ने रात में चांद देखा।
वह रोटी की तरह गोल था।
दूध की तरह सफेद था।
चांद को मामा भी कहते हैं।

कोयल काली होती है।
उसकी आवाज़ मीठी होती है।
कोयल गाना सुनाती है।
सबके मन को भाती है।

जंगल बहुत बड़ा होता है।
वहाँ बहुत सारे पेड़ होते हैं।
जंगल में जानवर भी होते हैं।
जंगल बहुत घना होता है।

कल मेरी माँ चावल लाई।
माँ ने चावल की खीर बनाई।
खीर में बादाम भी डाले।
सबने मिलकर खीर खाई।

मेरे चाचा कल फल लाए।
मीठा आम और केला लाए।
हमने फलों की चाट बनाई।
सबने चाट मज़े से खाई।

कंचन के गाँव में कुआँ है।
उसका पानी ठंडा-ठंडा है।
कुएँ के पास बाँस का पेड़ है।
बाँस से सीढ़ी बनती है।

मेरे घर में आम का पेड़ है।
उस पर आम लगते हैं।
माँ ने आम का अचार बनाया है।
मैं रोज़ अचार खाता हूँ।

सावन का महीना आता है।
मौसम बहुत सुहाना होता है।
पेड़ों पर झूला डालते हैं।
सब मिलकर गीत गाते हैं।

कछुआ एक छोटा जीव है।
इसकी पीठ कठोर होती है।
उसका दिल कोमल होता है।
वह धीरे-धीरे चलता है।

सुबह अख़बार आता है।
हर जगह की ख़बर लाता है।
सब अख़बार पढ़ते हैं।
पढ़कर सबकी ख़बर लेते हैं।

आंगन में एक पेड़ है।
पेड़ पर एक घोंसला है।
घोंसले में दो बच्चे हैं।
दोनों बहुत सुंदर हैं।

ख़रगोश सफेद होता है।
ख़रगोश बिल में रहता है।
फुदक-फुदक कर चलता है।
लंबी छलांग लगाता है।

एक नई बस चली है।
वह नीले रंग की है।
सबको शहर घुमाती है।
शाम में वापिस छोड़ती है।

इस साल बहुत बारिश हुई।
नदियों में पानी भर गया।
बाढ़ आने का अंदेशा था।
लेकिन बाढ़ आई नहीं।

गाँव में खेल शुरू हुए।
कुछ खिलाड़ी जीते,
कुछ खिलाड़ी हारे।
सबको बहुत मज़ा आया।

रेलगाड़ी बिजली से चलती है।
कुछ कोयले से भी चलती हैं।
लेकिन सब पटरी पर चलती हैं।
पटरी लोहे की होती है।

बस सड़क पर चलती है।
रेल पटरी पर चलती है।
नाव पानी में चलती है।
इनसे लोग आते-जाते हैं।

फूलों का एक बग़ीचा है।
उसमें तरह-तरह के फूल हैं।
ख़ुशबू से बग़ीचा महकता है।
सभी को वहाँ जाना पसंद है।

माँ ने नई चूड़ियाँ ख़रीदीं।
कुछ चूड़ियाँ हरी हैं।
कुछ चूड़ियाँ लाल हैं।
माँ चूड़ियाँ शादी में पहनेंगी।

मामा ने एक गिलहरी पाली।
गिलहरी बहुत मोटी है।
वह दूध-रोटी खाती है।
खाकर छिप जाती है।

आज माँ बीमार है।
माँ ने खाना नहीं बनाया।
पिताजी ने खिचड़ी बनाई।
हम सबने खिचड़ी खाई।

मेरे घर में एक तोता है।
वह इधर-उधर उड़ता है।
मिर्च-अमरूद खाता है।
सबका नाम लेता है।

गाँव में नई सड़क बनी है।
यह काले रंग की है।
इस पर वाहन चलेंगे।
यह शहर तक जाती है।

बिजली पानी से बनती है।
बिजली कोयले से भी बनती है।
यह हमारे बहुत काम आती है।
इससे घर में रोशनी होती है।

नदी किनारे एक जंगल है।
जंगल बहुत घना है।
उसमें बहुत से जानवर हैं।
सभी जानवर मिलकर रहते हैं।

गाँव में एक तालाब है।
तालाब बहुत बड़ा है।
सब वहाँ नहाते हैं।
कपड़े भी धोते हैं।

तितली सुंदर होती है।
यह रंग-बिरंगी होती है।
फूलों पर मंडराती है।
उनका रस पीती है।

आज बादल छाए हैं।
लगता है बारिश होगी।
हम सब बारिश में नहाएँगे।
कागज़ की नाव भी चलाएँगे।

कल दादी बाज़ार गईं।
बाज़ार से मेवे लाईं।
दादी लड्डू बनाएँगी।
हम सब लड्डू खाएँगे।

मेरे पास एक ख़रगोश है।
उसका रंग सफ़ेद है।
जब वह उछलता है,
तब गेंद की तरह लगता है।

कल माँ बाज़ार गई।
बाज़ार से एक कार लाई।
कार चाभी से चलती है।
कार में सीटी भी बजती है।

गरमी में आम आते हैं।
हमें आम बहुत पसंद हैं।
पापा रोज़ आम लाते हैं।
हम मज़े से खाते हैं।

दिल्ली में लाल क़िला है।
यह लाल रंग का है।
उसे देखने सब जाते हैं।
देखकर ख़ुश हो जाते हैं।

जब भी बारिश आती है,
मैं छाता लेकर जाता हूँ।
फिर भी मैं भीग जाता हूँ।
घर आकर गरम चाय पीता हूँ।

ताजमहल बहुत बड़ा है।
यह आगरा शहर में है।
इसका रंग सफ़ेद है।
लोग यहाँ घूमने आते हैं।

चूहा घर में आता है।
अनाज-रोटी खा जाता है।
मेरा कुत्ता भौंकता है।
घर की रखवाली करता है।

एक नई बस चली है।
वह नीले रंग की है।
सबको शहर घुमाती है।
शाम में वापिस छोड़ती है।

पेड़ बहुत काम आते हैं।
यह लकड़ी देते हैं।
यह फल देते हैं।
यह छाया भी देते हैं।

गाँव में नई सड़क बनी है।
यह काले रंग की है।
इस पर गाड़ी चलती है।
यह शहर तक जाती है।

गाँव में खेल शुरू हुए।
कुछ खिलाड़ी जीते।
कुछ खिलाड़ी हारे।
सबको बहुत मज़ा आया।

बस सड़क पर चलती है।
रेल पटरी पर दौड़ती है।
नाव पानी में तैरती है।
इनसे लोग आते-जाते हैं।

सीमा की सहेली रीमा है।
दोनों को पढ़ना पसंद है।
दोनों साथ में खेलती हैं।
दोनों साथ स्कूल जाती हैं।

माँ ने नई चूड़ियाँ ख़रीदीं।
कुछ चूड़ियाँ हरी हैं।
कुछ चूड़ियाँ लाल हैं।
माँ चूड़ी शादी में पहनेंगी।

गरमी में आम आते हैं।
हमें आम बहुत पसंद है।
पापा रोज़ आम लाते हैं।
हम मज़े से आम खाते हैं।

आज माँ बीमार है।
माँ ने खाना नहीं बनाया।
पिताजी ने खिचड़ी बनाई।
हम सबने खिचड़ी खाई।

नदी किनारे एक जंगल है।
जंगल बहुत घना है।
उसमें बहुत से जानवर हैं।
सभी जानवर मिलकर रहते हैं।

आज बादल छाए हैं।
लगता है बारिश होगी।
हम सब बारिश में नहाएँगे।
कागज़ की नाव भी चलाएँगे।

मेरे घर में एक तोता है।
वह इधर-उधर उड़ता है।
मिर्च-अमरूद खाता है।
सबका नाम लेता है।

माँ ने दाल-बाटी बनाई।
पापा ने घी से चूरमा।
सभी ने मिलकर खाया।
सबको खूब मज़ा आया।

यह खीरे का पौधा है।
यह मेरे दोस्त है।
मुझे रोज़ यह अपना फल देता है।
मैं अपने दोस्तों को खिलाता हूँ।

मेरी माँ का नाम दुलारी है।
वह रोज़ मुझे दुलार करती है।
कभी हँसाती है कभी रुलाती है।
इसमें माँ को मज़ा आता है।

मेरे दादा जी बूढ़े हैं।
मैं उनकी रोज़ सेवा करता हूँ।
कभी पानी कभी दवा देता हूँ।
दादाजी कहानी सुनाते हैं।

मेरे पिताजी किसान है।
रोज़ खेत में जाते हैं।
वहाँ फ़सल लगाते हैं।
मैं रोटी लेकर जाता हूँ।

देवघर एक शहर है।
बाबा नगरी कहलाता है।
काँवड़ियों से भर जाता है।
बोलबम सबको भा जाता है।

राजू और राढ़ी बाज़ार गए।
बाज़ार में उनको रवि भी मिला।
तीनों ने मिलकर रसमलाई खाई।
फिर एक साथ घर लौट आए।

आगरा एक बड़ा शहर है।
वहाँ ताजमहल भी है।
ताजमहल शाहजहाँ ने बनवाया था।
ताजमहल आगरा की शान है।

मोहन केला खाता है।
राधा के लिए भी लाता है।
राधा केला पाती है।
खाकर खुश हो जाती है।

आज बारिश हो रही है।
मैदान में पानी भर गया है।
सभी बच्चे घरों में बैठे हैं।
सभी बच्चे टीवी देख रहे हैं।

मीरा और मोहन दोस्त हैं।
दोनों साथ खेलते हैं।
रोज़ विद्यालय जाते हैं।
भेल पुड़ी खाते हैं।

मेरे पास पंखा है।
यह बिजली से चलता है।
गरमी दूर भगाता है।
मेरे मन को भाता है।

घर के पास नदी है।
नदी में मछली है।
नदी गहरी है।
इसमें नाव चलती है।

राम लाया ताला।
ताला काला काला।
घर पर ताला।
ताला बनता रखवाला।

आज बारिश हुई है।
हम पकौड़े बनाएंगी।
सब मिलकर खाएंगे।
बड़ा मज़ा आएगा।

कोयल निराली होती है।
काले रंग की होती है।
कू कू कर गीत सुनाती है।
सबके मन को भाती है।

आज रविवार है।
मौसम दमदार है।
चलो यार घूमने
हम तो तैयार हैं।

कल माँ बाज़ार गई
बाज़ार से एक नाव लाई।
नाव चाबी से चलती है।
पानी में गोल-गोल घूमती है।

आज बारिश हुई है।
हम पकौड़े बनाएंगें।
सब मिलकर खाएंगे।
बड़ा मज़ा आएगा।

दादा जी तालाब गए हैं।
लाल-लाल फूल लाये हैं।
सब मिलकर माला बनाएंगे।
हम सब माला पहनेंगे।

हाथी सैर करता है।
भालू नाच दिखाता है।
बंदर धमाल मचाता है।
भौंरे गुन गुनाते हैं।

गाँव में एक तालाब है।
तालाब बहुत बड़ा है।
सब वहाँ नहाते हैं।
कपड़े भी धोते हैं।

आज बुधवार है।
यहाँ बाज़ार लगा है।
कपड़े जूते, बैग मिठाई।
हम सब लेने जाएंगे।

बरसात के बाद धूप खिली है।
पीली-पीली बसंती धूप
मौसम बहुत सुहावना है।
ठंडी-ठंडी हवा चल रही है।

बग़ीचे में बहुत सारे पेड़ है।
कुछ छोटे पेड़, कुछ बड़े पेड़।
छोटे पेड़ अमरूद के हैं।
बड़े पेड़ आम, नीम के हैं।

रात को आँधी आई थी।
बग़ीचे में ढ़ेरों आम गिरे थे।
दीदी के हम संग गए थे।
कच्चे आम लाए थे।

मैंने फुलवारी लगाई है।
उसमें गुलाब के फूल हैं।
गुलाब लाल रंग के हैं।
सुंघने में खुशबू देते हैं।

घोड़ा हिन-हिन करता है।
बकरी मैं मैं करती है।
चिड़ियाँ चीं-चीं करती है।
कोयल कुहू-कुहू करती है।

काले बादल छाये हैं।
मोर नाच रहे हैं।
रिमझिम फुहारें गिरने लगीं।
मेढ़क टर-टर बोलने लगे।

आज खेत में जाएँगे।
मीठा तरबूज लाएँगे।
दीदी के साथ खाएँगें।
खूब मौज़ मनाएँगे।

आज मेले में जाएंगे।
चाय पकौड़ी खाएंगे।
केला लेके आएंगे।
हमसभी को खिलाएंगे।

राजू मामा लाए हैं।
ढेर मिठाई लाए हैं।
मोटर साथ में लाए हैं।
बच्चों का दिल बहलाए हैं।

आज बाज़ार जाऊँगा।
ढेर खिलौना लाऊँगा।
मोहन को लेजाऊँगा।
खूब मज़ा आएगा।

सेब का पेड़ लगाएँगे।
खाद, पानी डालेंगे।
पेड़ में फल लगाएँगे।
तोड़कर हम खाएँगे।

बरसात का दिन आया।
काला, पीला बादल छाया।
रिमझिम कर बरसात कराई।
ठंडी-ठंडी हवा चलाई।

सीता गाना गाएगी।
राम ढोल बजाएगा।
सारे बन्दर नाचेगें।
हम सब भी नाचेगें।

चलो पकौड़े लाते हैं।
पापा को खिलाते हैं।
छोटी बहना खाएगी।
जमके धूम मचाएगी।

मोहन के पास भालू है।
भालू सबसे चालू है।
दूध मलाई खाता है।
हम सबको ललचाता है।

आज सोमवार है।
मेले की बहार है।
राजा ढोल बजाता है।
सबको नाच दिखाता है।

रिमझिम रिमझिम सावन आता
सबके मन को है बहलाता।
बूदें टपटप करती जाती,
चारों ओर शोर मचाती।

कौआ आता काँय-काँय,
बकरी बोले मेय-मेय,
चिड़िया बोले चै-चै,
कुत्ता बोले भौ-भौ

मटर गोल-गोल होती है।
हरे रंग की होती है।
फलियों के अंदर रहती है।
खाने में मीठी लगती है।

गोल-गोल आलू है।
बड़ा ताकतवर है।
जो रोज़ आलू खाता है।
खूब (आलू जैसा) मोटा हो जाता है।

सफ़ेद-सफ़ेद चीनी के दाने।
मीठे-मीठे लगते हैं।
चाय हो या हलवा डालो।
सबको मीठा करते हैं।

दादा ने खीरे बोए।
खीरे हरे रंग के थे।
कुछ खीरे बेच दिए।
कुछ हमने खा लिए।

खीरा मोटा होता है।
ककड़ी पतली होती है।
दोनों गरमी में उगते हैं।
सलाद में खाए जाते हैं।

हरी-हरी मिर्च,
ख़ूब तीखी मिर्च,
खाने में डलती है।
मुँह को जलाती है।

नदी का घाट बड़ा है।
सब यहाँ नहाने आते हैं।
देर तक नहाते हैं।
ख़ूब मज़े करते हैं।

मामा घर आया।
साथ में आम लाया।
हमने आम खाया।
खूब मज़ा आया।

लाल लाल टमाटर
बड़ा बड़ा टमाटर
लाल बड़ा टमाटर
खट्टा खट्टा टमाटर

कमल और नग़मा आए।
साथ में अनार लाए।
अनार लाल लाल था।
लाल अनार रसदार था।

नाना और मामा आए।
नाना माला लाए।
मामा फल लाए।
हम सब नाच उठे।

कमल बाजा लाया।
बाजा लाल था।
बाजा लम्बा था।
लम्बा बाजा सुंदर था।

इलाहाबाद बड़ा शहर है।
वहाँ पर संगम है।
संगम के किनारे किला है।
हम सब वहाँ घूमने जाएंगे।

पेड़ पर एक घोंसला है।
घोसले में दो बच्चे है।
बच्चे चीं-चीं करते हैं।
बहुत सुंदर लगते हैं।

मेरे पास एक गिलहरी है।
वह रोटी, चावल खाती है।
उसकी पूँछ पर धारियां हैं।
उसकी आँखें गोल सुनहरी हैं।

भालू काला होता है।
घने जंगलों में रहता है।
मस्ती में वह झूमता है।
सबको नाच दिखाता है।

अनिल मेरा भाई है।
वह बहुत आलसी है।
वह बहुत खाता है।
फिर भी मोटा नहीं हो पाता है।

गोल-गोल यह चलता है।
सबके मन को भाता है।
गरमी दूर भगाता है।
ख़ूब मज़ा आ जाता है।

चीनी सफेद होती है।
गन्ने से यह बनती है।
खाने में यह मीठी है।
रोज़ काम में आती है।

बारहखड़ी कार्ड

अ	आ	इ	ई	उ	ऊ	ए	ऐ	ओ	औ	अं	अः
क	का	कि	की	कु	कू	के	कै	को	कौ	कं	कः
ख	खा	खि	खी	खु	खू	खे	खै	खो	खौ	खं	खः
ग	गा	गि	गी	गु	गू	गे	गै	गो	गौ	गं	गः
घ	घा	घि	घी	घु	घू	घे	घै	घो	घौ	घं	घः
च	चा	चि	ची	चु	चू	चे	चै	चो	चौ	चं	चः
छ	छा	छि	छी	छु	छू	छे	छै	छो	छौ	छं	छः
ज	जा	जि	जी	जु	जू	जे	जै	जो	जौ	जं	जः
झ	झा	झि	झी	झु	झू	झे	झै	झो	झौ	झं	झः
ट	टा	टि	टी	टु	टू	टे	टै	टो	टौ	टं	टः
ठ	ठा	ठि	ठी	ठु	ठू	ठे	ठै	ठो	ठौ	ठं	ठः
ड	डा	डि	डी	डु	डू	डे	डै	डो	डौ	डं	डः
ढ	ढा	ढि	ढी	ढु	ढू	ढे	ढै	ढो	ढौ	ढं	ढः
त	ता	ति	ती	तु	तू	ते	तै	तो	तौ	तं	तः
थ	था	थि	थी	थु	थू	थे	थै	थो	थौ	थं	थः

द	दा	दि	दी	दु	दू	दे	दै	दो	दौ	दं	दः
ध	धा	धि	धी	धु	धू	धे	धै	धो	धौ	धं	धः
न	ना	नि	नी	नु	नू	ने	नै	नो	नौ	नं	नः
प	पा	पि	पी	पु	पू	पे	पै	पो	पौ	पं	पः
फ	फा	फि	फी	फु	फू	फे	फै	फो	फौ	फं	फः
ब	बा	बि	बी	बु	बू	बे	बै	बो	बौ	बं	बः
भ	भा	भि	भी	भु	भू	भे	भै	भो	भौ	भं	भः
म	मा	मि	मी	मु	मू	मे	मै	मो	मौ	मं	मः
य	या	यि	यी	यु	यू	ये	यै	यो	यौ	यं	यः
र	रा	रि	री	रु	रू	रे	रै	रो	रौ	रं	रः
ल	ला	लि	ली	लु	लू	ले	लै	लो	लौ	लं	लः
व	वा	वि	वी	वु	वू	वे	वै	वो	वौ	वं	वः
श	शा	शि	शी	शु	शू	शे	शै	शो	शौ	शं	शः
ष	षा	षि	षी	षु	षू	षे	षै	षो	षौ	षं	षः
स	सा	सि	सी	सु	सू	से	सै	सो	सौ	सं	सः
ह	हा	हि	ही	हु	हू	हे	है	हो	हौ	हं	हः

शिक्षा का अधिकार

सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
वरुण मार्ग, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली-110024